हिन्दी एक्शन

दैनिक समाचार पत्र भोपाल से प्रकाशित

Phone : 0755-4076274
Mob. : 09425011299
Email : urduaction@gmail.com
Website : www.urduaction.com
RNI No. 67078/97
डाक पंजीयन क्र./म.प्र./भोपाल/134/2024-26
(8 pages) कीमत 1.00 रूपये

वर्ष 30 अंक (शुमारा) 06 रविवार, भोपाल दिनांक 06.09.2026 मुताबिक 23 रबि उल अव्वल 1448 हिजरी इतवार

किसानों की सेवा का त्यौहार है बलराम कृषि महोत्सव : मुख्यमंत्री डॉ.यादव

मुख्यमंत्री ने भिंड जिले में हुए बलराम कृषि महोत्सव में वीसी से की सहभागिता



भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि भिंड की धरती जय जवान-जय किसान का सबसे अच्छा और सार्थक उदाहरण है। कभी डकैतों की समस्या से जूझने वाले इस क्षेत्र की पहचान आज उद्योग,रोजगार और कृषि से हो रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बलराम कृषि महोत्सव अन्नदाता किसानों की सेवा और इनके प्रति आभार व्यक्त करने का त्यौहार है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को भिंड जिले में हुए बलराम कृषि महोत्सव को मुख्यमंत्री निवास से वीडियो कान्फ्रेंसिंग से संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम में मौजूद किसानों से कहा कि कृषि क्षेत्र आने वाले समय में प्रदेश की अर्थव्यवस्था का मजबूत स्तंभ और सबकी समृद्धि की सबसे बड़ी गारंटी बनने जा रहा है। उन्होंने किसानों से अपील करते हुए कहा कि वे दुग्ध उत्पादन, श्री अन्न उत्पादन, मछली पालन,उद्यानिकी जिसमें भी उनकी रुचि है, एक नई शुरुआत के साथ आगे बढ़ें। हमारी सरकार फील्ड से लेकर फैक्ट्री तक हमेशा किसानों के साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी किसान इस बलराम कृषि महोत्सव में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। मुख्यमंत्री ने कहा कि धरती माता ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। अपने हीरे जैसी जमीन किसी को न बेचें, बल्कि अपने बच्चों को भी इसी पूंजी में परिश्रम और समर्पण का बीजरूपी निवेश करना सिखायें। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि कृषि, पशुपालन और मछली पालन में भिंड तेजी से प्रगति कर रहा है। चंबल, सिंध और पहुज जैसी नदियों के पानी से सिंचित भिंड में बाजरा, गेहूं और सरसों खूब होती है। सरसों के उत्पादन में भिंड की अपनी अलग पहचान है। मुरैना-भिंड में प्रदेश की 50 प्रतिशत से ज्यादा सरसों की पैदावार होती है। मुख्यमंत्री ने प्रसन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि भिंड जिले के किसान अब प्राकृतिक खेती में भी रुचि ले रहे हैं। यहां 3 हजार से अधिक किसानों ने 1250 हेक्टेयर रकबे में प्राकृतिक खेती की है। यहां दुग्ध संकलन में 31 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। लगभग 60 गौशालाओं में गौसेवा भी हो रही है। अब पांडरी गांव में स्वावलंबी गौशाला के लिए 5 हजार निराश्रित गौवंश के आश्रय की तैयारी की जा रही है। मछली पालन में भी यहां के प्रगतिशील लोगों ने नई तकनीक अपनाई है। भवथरा गांव में 25 लाख रुपए की लागत से आधुनिक मत्स्य पालन तकनीक लगाई गई है, जिससे 8 मीट्रिक टन मछली का उत्पादन हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार और किसान मिलकर एक नया इतिहास रचेंगे। यहां के किसानों ने पशुपालन और मछली पालन में रुचि लेकर इतिहास रचने की शुरुआत कर दी है। सरकार हमेशा इनके साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिंचाई परियोजनाओं से भिंड की खेती-किसानी बदल रही है। उन्होंने कहा कि भिंड जिले को ऐतिहासिक पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदी जोड़ो परियोजना का लाभ मिलने जा रहा है, इससे यहां की खेती की तस्वीर बदल जाएगी।

ट्रक की टक्कर से सुपरवाइजर की दर्दनाक मौत,ट्रक चालक हुआ फरार

भोपाल। राजधानी भोपाल के निशातपुरा थाना क्षेत्र में शनिवार सुबह तेज रफ्तार ट्रक की टक्कर से एक्टिवा सवार सुपरवाइजर की मौत हो गई। हादसे के बाद गंभीर हालत में उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। हादसे की सूचना मिलने के बाद उनकी इकलौती बेटी कॉलेज से सीधे पोस्टमार्टम रूम पहुंची। जानकारी के अनुसार 53 वर्षीय कुलदीप सक्सेना शिवानी होम्स में परिवार के साथ रहते थे और दीवानगंज स्थित एक केमिकल फैक्ट्री में सुपरवाइजर के पद पर कार्यरत थे। शनिवार सुबह करीब 9 बजे वे रूटीन चेकअप के लिए एक्टिवा से भानपुर स्थित निजी अस्पताल जा रहे थे। इसी दौरान डी मार्ट और पीपुल्स अस्पताल के बीच पीछे से आए तेज रफ्तार ट्रक ने उनकी एक्टिवा को टक्कर मार दी। टक्कर लगने से कुलदीप सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। राहगीरों की मदद से उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। हादसे के बाद ट्रक चालक वाहन समेत मौके से फरार हो गया। सूचना मिलने पर निशातपुरा पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू की। पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है। घटनास्थल और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज की मदद से फरार ट्रक और उसके चालक की तलाश की जा रही है।

सरकार को स्पष्ट करें नया ड्राफ्ट तैयार करने की जरूरत क्यों पड़ी : आरिफ मसूद

भोपाल मास्टर प्लान पर आरिफ मसूद का सवाल-पुराना ड्राफ्ट रद्द नहीं तो नया क्यों?



भोपाल। भोपाल मास्टर प्लान को लेकर कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद ने सरकार की ओर से दी गई 'सैद्धांतिक अनुमति' पर सवाल उठाए हैं। शनिवार को पत्रकार वार्ता में आरिफ मसूद ने कहा कि मास्टर प्लान लागू करने की प्रक्रिया में ड्राफ्ट तैयार कर उसका प्रकाशन, दावे-आपत्तियां और उनका निराकरण शामिल है। इस पूरी प्रक्रिया में करीब पांच महीने लग सकते हैं। कांग्रेस विधायक मसूद ने दावा किया कि उनके कार्यकाल के दौरान तैयार किया गया मास्टर प्लान का ड्राफ्ट पहले से मौजूद है और उसे रद्द करने का कोई आदेश जारी नहीं हुआ है। ऐसे में सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि नया ड्राफ्ट तैयार करने की जरूरत क्यों पड़ रही है। उन्होंने कहा कि केवल 'सैद्धांतिक अनुमति' की बात से प्रक्रिया स्पष्ट नहीं होती और इससे लोगों की चिंता दूर नहीं हो रही है। मास्टर प्लान को लेकर आंदोलन जारी रखने की घोषणा करते हुए आरिफ मसूद ने 9 सितंबर को 'रन फॉर मास्टर प्लान' आयोजित करने की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि शाम 7.30 बजे 11 नंबर से हबीबगंज थाने के सामने गांधी प्रतिमा तक करीब डेढ़ किलोमीटर की दौड़ होगी। मसूद ने कहा कि कार्यक्रम में तिरंगा रहेगा, लेकिन किसी राजनीतिक दल का बैनर नहीं होगा और न ही किसी व्यक्ति के खिलाफ नारे लगाए जाएंगे। उन्होंने व्यापारियों, डॉक्टरों, सिविल सोसाइटी, एनजीओ और आम नागरिकों से इसमें शामिल होने की अपील की। उन्होंने बताया कि अगले चार दिनों में विभिन्न संगठनों से संपर्क कर अभियान में शामिल होने का आग्रह किया जाएगा। सीलिंग की कार्रवाई को लेकर मसूद ने कहा कि मास्टर प्लान और सीलिंग दो अलग-अलग विषय हैं। उनके अनुसार, मास्टर प्लान में रिहायशी और व्यावसायिक क्षेत्रों का स्पष्ट निर्धारण होने से कई समस्याओं का समाधान हो सकता है, लेकिन इससे सीलिंग की समस्या पूरी तरह खत्म नहीं होगी। उन्होंने कहा कि सीलिंग की कार्रवाई से दुकानदारों के साथ रिहायशी इलाकों में रहने वाले लोग भी प्रभावित हो रहे हैं। उनका कहना था कि कई लोगों ने रहने के लिए मकान या बंगले खरीदे, लेकिन अब वहां व्यावसायिक गतिविधियों को लेकर विवाद सामने आ रहे हैं। वहीं, वर्षों से कर का भुगतान कर रहे कारोबारियों पर कार्रवाई को लेकर भी उन्होंने सरकार से स्थिति स्पष्ट करने की मांग की। मसूद ने कहा कि व्यवस्था में हुई गलतियों का खामियाजा आम जनता को नहीं भुगतना चाहिए और भविष्य के लिए स्थायी समाधान की दिशा में काम होना चाहिए। मसूद ने आरोप लगाया कि सरकार सुप्रीम कोर्ट के रुख को लेकर दबाव में है। उन्होंने कहा कि यदि सरकार मास्टर प्लान लागू करना चाहती है तो पहले से तैयार ड्राफ्ट को आगे बढ़ाकर आवश्यक संशोधन किए जा सकते हैं। उनका कहना था कि इससे प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में अनावश्यक देरी से बचा जा सकता है। उन्होंने सरकार से मांग की कि मास्टर प्लान के मुद्दे पर स्पष्ट रोडमैप सामने रखा जाए, ताकि शहर के लोगों और कारोबारियों में बनी असमंजस की स्थिति दूर हो सके। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के व्यापारियों को परेशान नहीं होने देने संबंधी बयान पर भी मसूद ने सवाल उठाए।

मध्यप्रदेश में बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव,19 जिलों में अलर्ट

ग्वालियर-चंबल में 2 दिन रहेगा असर, प्रदेश के 7 जिलों में स्कूलों की छुट्टी

भोपाल। पिछले तीन दिनों से बारिश का सिलसिला आज शनिवार को भी जारी रहा। मध्य प्रदेश में बारिश का जोर अब पूर्व से खिसककर उत्तरी हिस्से की ओर बढ़ गया है। ग्वालियर-चंबल समेत सागर और उज्जैन संभाग में अगले दो दिन मौसम ज्यादा सक्रिय रहने की संभावना है। शनिवार को श्योपुर और शिवपुरी में अति भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है, जबकि 17 अन्य जिलों में भारी बारिश की चेतावनी है। लगातार बारिश के कारण प्रदेश के बारिश के आंकड़ों में भी बदलाव आया है। पूर्वी मध्यप्रदेश के जबलपुर, रीवा, सागर और शहडोल संभाग में सीजन में पहली बार सामान्य से 3 प्रतिशत अधिक बारिश दर्ज हो गई है। वहीं प्रदेश में अब तक कुल 762.7 मिमी यानी करीब 30 इंच पानी बरसा है, जो सामान्य बारिश 816 मिमी यानी 32.1 इंच से 2.1 इंच कम है। मौसम विभाग के अनुसार रविवार को श्योपुर और शिवपुरी में अति भारी बारिश हो सकती है। इनके अलावा ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़,छतरपुर, पन्ना, सतना, सागर, गुना, अशोकनगर, विदिशा, राजगढ़, शाजापुर, आगर-मालवा और मंदसौर में भारी बारिश का अनुमान है। भोपाल, रायसेन, सीहोर, इंदौर,धार,आलीराजपुर, बुरहानपुर, बड़वानी, खंडवा, खरगोन, झाबुआ, उज्जैन, नीमच, देवास, रतलाम, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, जबलपुर, कटनी, छिंदवाड़ा, सिवनी, नरसिंहपुर, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी, पांढुर्णा, रीवा, सीधी, सिंगरौली, मऊगंज,मैहर, शहडोल, उमरिया,अनूपपुर और दमोह में भी बारिश होने की संभावना है। इन इलाकों में कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश हो सकती है। बारिश के कारण कई जिलों में जनजीवन प्रभावित हुआ है। इसे देखते हुए 5 सितंबर को सात जिलों में स्कूल बंद रखने का फैसला लिया गया है। मुरैना में सभी स्कूल और आंगनवाड़ी केंद्र बंद रहेंगे। श्योपुर और गुना में नर्सरी से 12वीं तक के स्कूल बंद किए गए हैं। शिवपुरी में सभी शैक्षणिक संस्थानों के साथ आंगनवाड़ी केंद्र भी बंद रहेंगे।

मुख्यमंत्री ने पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर किया नमन

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने पूर्व राष्ट्रपति,भारत रत्न से सम्मानित डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर पुण्य स्मरण कर उन्हें नमन किया है। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने एक्स पर कहा कि डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जीवन भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षा के उच्च आदर्शों और मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण का प्रेरणास्त्रोत है। उनके विचार चरित्र निर्माण और राष्ट्र सेवा के सशक्त आधार हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के अवसर पर भावी पीढ़ियों को ज्ञान, संस्कार और जीवन-मूल्यों से समृद्ध करने वाले सभी गुरुजनों के प्रति हार्दिक सम्मान व्यक्त करते हुए शिक्षक दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। वहीं मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने मध्यप्रदेश के गौरव, प्रख्यात व्यंग्यकार, पद्मश्री से सम्मानित स्व. शरद जोशी की पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि दी है। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने एक्स पर कहा कि 'परिक्रमा', 'जीप पर सवार इल्लियां', 'यथा संभव' जैसी कालजयी रचनाओं से उन्होंने समाज की विसंगतियों पर सभी का ध्यान आकृष्ट कर सोचने पर मजबूर किया। उनकी सहज, चुटीली और धारदार लेखनी साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

भोपाल में 9300 जनसेवा मित्रों की बहाली की मांग को लेकर दिया धरना

भोपाल। प्रदेश के 9300 जनसेवा मित्रों की सेवा बहाल करने की मांग को लेकर संगठन के पदाधिकारियों और सदस्यों ने शनिवार को राजधानी भोपाल के बोर्ड ऑफिस चौराहा स्थित डॉ.भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा के सामने धरना दिया। प्रदर्शनकारियों ने मुख्यमंत्री से पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के उस वादे को पूरा करने की मांग की, जिसमें जनसेवा मित्रों की सेवाएं निरंतर जारी रखने की घोषणा की गई थी। जनसेवा मित्र संगठन मध्य प्रदेश के अध्यक्ष आकाश रजक के नेतृत्व में हुए प्रदर्शन में अस्थायी,आउटसोर्स कर्मचारी मोर्चा के अध्यक्ष वासुदेव शर्मा ने कहा कि पहले से कार्यरत जनसेवा मित्रों की सेवा बहाली किए बिना नई भर्ती करना उचित नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार स्पष्ट दिशा-निर्देश और पारदर्शी प्रक्रिया के अभाव में मुख्यमंत्री यंग इंटर्न्स फॉर गुड गवर्नेंस प्रोग्राम के तहत 4865 युवाओं की भर्ती कर रही है। संगठन के अनुसार, वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव से पहले करीब 9300 युवाओं को जनसेवा मित्र के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्हें 10 हजार रुपए मासिक मानदेय दिया जाता था। चुनाव के दौरान इनसे विभिन्न सरकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार सहित लाड़ली बहना योजना से जुड़े कार्य भी कराए गए। संगठन का दावा है कि चुनाव के बाद उनकी सेवाएं समाप्त कर दी गईं, जिसके बाद से वे बहाली की मांग को लेकर आंदोलन कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश पुलिस की नशे के विरुद्ध बड़ी कार्रवाई,अफीम बरामद

भोपाल। मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा प्रदेश में अवैध मादक पदार्थों की तस्करी एवं नशे के विरुद्ध लगातार प्रभावी कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में थाना नीमच सिटी पुलिस ने एक महिला आरोपी को 11 किलो 700 ग्राम अवैध अफीम, जिसकी अनुमानित कीमत 58 लाख 50 हजार रुपये है, के साथ गिरफ्तार किया है। 05 सितंबर को थाना नीमच सिटी पुलिस टीम ने अपराध विवेचना के दौरान आमरोड-दरक वेयर हाउस के सामने गिरदौड़ा क्षेत्र में संदेह के आधार पर एक महिला को पकड़ा। महिला के पास रखे सामान की तलाशी लेने पर उसमें कुल 11 किलो 700 ग्राम अवैध मादक पदार्थ अफीम प्राप्त हुआ। जिसे विधिवत जब्त किया। प्रकरण में थाना नीमच सिटी पर धारा 8/18 एनडीपीएस एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है। गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ में अवैध अफीम उपलब्ध कराने वाले को एनडीपीएस एक्ट के तहत सहआरोपी बनाया गया है। पुलिस द्वारा आरोपी की तलाश की जा रही है। मध्यप्रदेश पुलिस नशे के कारोबार से जुड़े प्रत्येक स्तर,स्त्रोत, परिवहन, सप्लाई एवं तस्करी नेटवर्क पर कार्रवाई करते हुए प्रदेश को नशामुक्त बनाने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है।



राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आरसीवीपी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी में राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में उल्लेखनीय कार्य करने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया।

भोपाल में 16 दिन बाद शिक्षक अभ्यर्थियों का अनशन हुआ खत्म

दिग्विजय ने जूस पिलाकर तुड़वाया, शिक्षा मंत्री से फोन पर की बात



भोपाल। भोपाल के नीलम पार्क में पदवृद्धि और नियुक्ति की मांग को लेकर पिछले 16 दिनों से आंदोलन और भूख हड़ताल कर रहे शिक्षक अभ्यर्थियों का अनशन शनिवार को समाप्त हो गया। शिक्षक दिवस के मौके पर पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह धरना स्थल पहुंचे। उन्होंने अभ्यर्थियों की समस्याएं सुनीं और स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह से फोन पर बातचीत की। मंत्री की ओर से आगामी 8 सितंबर, मंगलवार को वर्ग-2 और वर्ग-3 के अभ्यर्थियों के प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठक का आश्वासन मिलने के बाद दिग्विजय सिंह ने अभ्यर्थियों को जूस पिलाकर अनशन समाप्त कराया। दिग्विजय सिंह ने कहा कि बैठक में अभ्यर्थियों की पदवृद्धि समेत अन्य मांगों पर चर्चा की जाएगी और वे स्वयं भी प्रतिनिधिमंडल के साथ मौजूद रहेंगे। उन्होंने आश्वासन दिया कि यदि मांगों का समाधान नहीं हुआ तो वे अभ्यर्थियों के साथ दोबारा आंदोलन करेंगे और जरूरत पड़ने पर मुख्यमंत्री निवास के सामने धरना भी देंगे। शिक्षक अभ्यर्थियों का आंदोलन पिछले कुछ दिनों में राजनीतिक मुद्दा बन गया है। जन्माष्टमी के दौरान प्रदर्शनकारियों ने केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का काफिला रोककर अपनी मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा था। इसके अगले दिन दिग्विजय सिंह के धरना स्थल पहुंचने से मामले ने राजनीतिक रंग ले लिया। दिग्विजय सिंह इससे पहले भी अभ्यर्थियों के बीच पहुंच चुके हैं। उन्होंने उस समय भी उनकी मांगों को उचित बताते हुए सरकार के सामने मुद्दा उठाने का भरोसा दिया था। धरना स्थल पर कुछ आंदोलनकारियों की नारेबाजी पर दिग्विजय सिंह नाराज भी हुए। उन्होंने प्रदर्शनकारियों से शांत रहने को कहा और स्पष्ट किया कि यदि नारेबाजी जारी रही तो वे वहां से चले जाएंगे। इसके बाद आंदोलनकारी शांत हुए और दिग्विजय सिंह ने अभ्यर्थियों से बातचीत जारी रखी। शिक्षक दिवस के मौके पर दिग्विजय सिंह ने प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था और शिक्षक भर्ती को लेकर राज्य सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने टीईटी की अनिवार्यता पर पुनर्विचार करने और रिक्त शिक्षक पदों को भरने की मांग की। उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में पद खाली होने के बावजूद योग्य और चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति के लिए इंतजार करना पड़ रहा है। दिग्विजय सिंह ने अभ्यर्थियों को भरोसा दिलाया कि वे उनकी आवाज संसद के दोनों सदनों में उठाएंगे।

चरमराई नगर की सफाई व्यवस्था, सड़कों पर बह रहा नालियों का गंदा पानी

बुरहानपुर- शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने के नगर निगम के दावे जमीनी हकीकत के सामने खोखले साबित होते नजर आ रहे हैं। शहर के भीतरी हिस्सों और रहवासी क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था बदहाल होने से नागरिकों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। सहेत कुआं के कोलीवाडा आलमगंज के कई हिस्सों में अनेक स्थानों पर नालियों का गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है, जिससे गंदगी फैलने के साथ आवागमन भी प्रभावित हो रहा है। शहर की विभिन्न गलियों में नालियों की नियमित सफाई नहीं होने के कारण पानी की निकासी बाधित हो रही है। नालियों का पानी



सड़क पर आने से कीचड़ और दुर्गंध की स्थिति बनी हुई है। वहीं, सीवरेज के चेंबर बार-बार चौक होने से समस्या और गंभीर हो रही है। चेंबर ब्लॉक होने के कारण गंदा पानी सड़क पर जमा हो जाता है और राहगीरों को इसी गंदे पानी के बीच से होकर गुजरना पड़ता है। नगर निगम के पास सफाई व्यवस्था के लिए पर्याप्त संसाधन और सफाई कर्मचारियों की व्यवस्था होने के बावजूद समस्या बनी हुई है। नागरिकों का कहना है कि सफाई कर्मचारियों की कमी से अधिक समस्या उनके कार्यों के उचित सुपरविजन की है। संबंधित सफाई सुपरवाइजर यदि नियमित रूप से क्षेत्रों का निरीक्षण करें और कर्मचारियों से निर्धारित कार्य करवाएं तो काफी हद तक स्थिति में सुधार हो सकता है। शहरवासियों का आरोप है कि सफाई व्यवस्था की निगरानी केवल कागजों तक सीमित रह गई है। भीतरी गलियों में नियमित सफाई, नालियों की निकासी और सीवरेज चेंबर की समय-समय पर जांच नहीं होने से समस्या लगातार बढ़ रही है। इससे मच्छरों के पनपने और बीमारी फैलने का खतरा भी बना हुआ है। नागरिकों ने नगर निगम प्रशासन से मांग की है कि शहर के भीतरी क्षेत्रों में विशेष सफाई अभियान चलाया जाए। साथ ही सफाई सुपरवाइजरों को नियमित निरीक्षण की जिम्मेदारी देकर लापरवाही बरतने वाले कर्मचारियों पर कार्रवाई की जाए, ताकि शहर की सफाई व्यवस्था पटरी पर लौट सके।

उर्दू सीखिए

हिन्दी	उर्दू अनुवाद	उर्दू
विरोध	मुखालिफ़त	مخالفت
सत्ता	खिलाफत	خلافت
दिवस	यौम	یوم
होंठ	लब	لب
कन्या	दोशीज़ा	دوشیزہ
केश	गेसू	گیسو
प्रेम कविता	ग़ज़ल	غزل
हज़रत मुहम्मद की प्रशंसा वाली कविता	नअत	نعت
खुदा की प्रशंसा वाली कविता	हम्द	حمد
धर्मयुद्ध	जिहाद	جہاد

बाल विवाह के खिलाफ भारत की मुहिम को वैश्विक मान्यता

संयुक्त राष्ट्र ने 27 नवंबर को घोषित किया अंतरराष्ट्रीय दिवस; मध्य प्रदेश ने भी बढ़ाए कदम

भोपाल, 5 सितंबर 2026ः बाल विवाह के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में भारत से उठी आवाज को वैश्विक मान्यता मिली है। संयुक्त राष्ट्र ने 27 नवंबर को 'बाल विवाह, कम उम्र और जबरन विवाह के उन्मूलन के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस' घोषित किया है। भारत के लिए इस तारीख का विशेष महत्व है, क्योंकि 27 नवंबर 2024 को ही भारत सरकार ने 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान की शुरुआत की थी। जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन (जेआरसी) के संस्थापक भुवन ऋभु ने बाल विवाह के खात्मे के लिए एक अलग समर्पित अंतरराष्ट्रीय दिवस घोषित किए जाने की पहल की थी। मार्च 2026 में संयुक्त राष्ट्र में भुवन ऋभु ने अपने संबोधन के दौरान कई वैश्विक नेताओं की मौजूदगी में एक बार फिर बाल विवाह के



खिलाफ एक अंतरराष्ट्रीय दिवस घोषित करने के लिए प्रस्ताव लाने की बात कही। तब अफ्रीकी देश सिएरा लियोन की फर्स्ट लेडी डॉ. फातिमा मादा बायो भी मौजूद थीं, जिन्होंने इस पहल का समर्थन किया। इसके बाद सिएरा लियोन ने भारत सहित 67 देशों के अनुमोदन वाला प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र महासभा में पेश किया, जिसमें 27 नवंबर को बाल विवाह समाप्त करने के लिए समर्पित वैश्विक दिवस घोषित करने की बात थी। 4 सितंबर को संयुक्त राष्ट्र ने इस प्रस्ताव को पारित कर दिया। संयुक्त राष्ट्र में प्रस्ताव पेश करने के दौरान सिएरा लियोन की फर्स्ट लेडी डॉ. फातिमा मादा बायो ने यूएन हॉल में जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन का विशेष रूप से उल्लेख भी किया। जेआरसी बाल संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वाले नागरिक समाज संगठनों का दुनिया का सबसे बड़ा नेटवर्क है और अपने चाइल्ड मैरिज फ्री वर्ल्ड% अभियान के तहत बाल विवाह के खिलाफ एक वैश्विक लड़ाई लड़ रहा है। भारत में, जेआरसी अपने सहयोगी संगठनों के साथ देश के सभी 782 जिलों में बाल विवाह के लिए संवेदनशील समुदायों के बीच काम कर रहा है। जेआरसी ने अपने सहयोगी संगठनों के साथ सरकारों और कानून-प्रवर्तन एजेंसियों के सहयोग से समुदायों, स्कूलों, पंचायतों, आदिवासी और वंचित समुदायों, महिलाओं, पुलिसकर्मियों, धर्मगुरुओं और जनप्रतिनिधियों को बाल विवाह रोकने के लिए एकजुट किया है। है। पिछले तीन वर्षों में जेआरसी ने मध्य प्रदेश के 55 जिलों में 14 सहयोगी संगठनों के साथ मिलकर 62,898, जबकि पूरे भारत में 5,50,000 लाख से अधिक बाल विवाह रुकवाएं हैं। संयुक्त राष्ट्र में इस प्रस्ताव के अपनाए जाने के मौके पर यूएन प्रतिनिधिमंडल के साथ मौजूद जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन के संस्थापक भुवन ऋभु, नागरिक समाज संगठनों की ओर से एकमात्र प्रतिनिधि थे। उन्होंने इस घोषणा का स्वागत करते हुए कहा, आज भारत बाल संरक्षण के क्षेत्र में दुनिया के सामने विश्वगुरु के रूप में स्थापित हो रहा है। 'चाइल्ड मैरिज फ्री इंडिया' अभियान की शुरुआत सबसे पहले बच्चों और समुदायों ने की और बाद में सरकार ने इसे समर्थन देकर बड़े स्तर पर आगे बढ़ाया। 27 नवंबर 2024 को इस अभियान के तहत 25 करोड़ से ज्यादा लोगों ने एक साथ मिलकर बाल विवाह के खिलाफ शपथ ली थी। आज यही अभियान विश्व द्वारा स्वीकार किए गए एक अंतरराष्ट्रीय दिवस का रूप ले चुका है। यह हर भारतीय के लिए गर्व का पल है। मैं बच्चों, समुदाय के नेताओं, धर्मगुरुओं और खासतौर से अपने सभी सहयोगी संगठनों को बधाई और धन्यवाद देना चाहता हूं, जिनकी कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता ने आज के इस दिन को संभव बनाया। मैं प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली भारत सरकार और महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी को उनके निर्णायक नेतृत्व और प्रतिबद्धता के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूं। दुनिया हमारी ओर देख रही है और हमारा काम अभी बस शुरू हुआ है।

पत्रकारों की आवाज दबना लोकतंत्र के लिए खतरे की घंटी : एकता संगठन जलगांव

जलगांव (अकिल ख़ान ब्यावली)ः दिल्ली में महिला पत्रकार नफीसा खान और शाहीन खान के साथ पुलिस द्वारा कथित मारपीट तथा उनकी धार्मिक पहचान को लेकर कथित पूछताछ के मामले ने पत्रकारिता की स्वतंत्रता,



नागरिक अधिकारों और पुलिस की जवाबदेही को लेकर सवाल खड़े किए हैं। इसके विरोध में जलगांव के शिवछत्रपती महाराज चौक में एकता संगठन की ओर से प्रदर्शन कर मामले की स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी जांच की मांग की गई। संगठन ने राष्ट्रपति, केंद्रीय गृहमंत्री, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग तथा प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया से मामले में तत्काल हस्तक्षेप की मांग की। संगठन के अनुसार, पुलिस ने वीवीआईपी मार्ग में कथित बाधा उत्पन्न होने की बात कही है, जबकि पत्रकारों ने मारपीट के आरोप लगाए हैं। ऐसे में सच्चाई आरोप-प्रत्यारोप से नहीं, बल्कि सीसीटीवी फुटेज, मोबाइल वीडियो, उपलब्ध साक्ष्यों और स्वतंत्र मेडिकल जांच से सामने आनी चाहिए। संगठन के समन्वयक फारूक शेख ने कहा कि संविधान प्रत्येक नागरिक को समानता, सम्मान और न्याय का अधिकार देता है। उन्होंने कहा कि संगठन किसी पक्ष को जांच से पहले दोषी ठहराने के पक्ष में नहीं है, लेकिन यदि जांच में किसी पुलिसकर्मी की भूमिका कानून-विरुद्ध पाई जाती है तो उसके खिलाफ कानूनी और विभागीय कार्रवाई होनी चाहिए। संगठन की नाझिया शेख ने कहा कि मामला केवल दो महिला पत्रकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सवाल लोकतंत्र की बुनियाद से जुड़ा है कि पत्रकार सत्ता से कितनी स्वतंत्रता से सवाल पूछ सकते हैं। उन्होंने कहा, सत्ता से सवाल करना अपराध नहीं, पत्रकारिता करना अपराध नहीं और धार्मिक पहचान रखना भी अपराध नहीं है। कानून से ऊपर कोई नहीं हो सकता।प्रदर्शन के दौरान दिल्ली पुलिस हाय-हाय, दिल्ली पुलिस पर कार्रवाई होनी चाहिए, महिलाओं को संरक्षण मिलना चाहिए और सच्ची पत्रकारिता जिंदाबाद जैसे नारे लगाए गए। प्रदर्शन मुफ्ती खालिद के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। प्रदर्शन में नाझिया शेख, तकदीस शेख, मीहीरीन शेख, आलिया शेख, तोहरा सादिक, सकीना इस्माईल, रिबीन हरीश, समीन नईम, शाहीन रईस सहित अनेक महिलाएं तथा हाफिज अब्दुल रहीम पटेल, एडवोकेट आवेश शेख, अनिस शाह, नजमोद्दीन शेख, सलीम इनामदार, मतीन पटेल, मजहर खान, अनवर सिकलगार, आरिफ देशमुख, रज्जाक पटेल, सईद शेख, रऊफ रहीम, मौलाना शफिक पटेल, मुजाहिद खान, अख्तर शेख, रहीम जाकीर शेख, गुफरान मौलाना, ओझर देशमुख, महमूद शेख, दानियाल शेख, अब्दुल रऊफ पटेल, अमीन शेख, अमीर सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बैगा आदिवासी बच्चों की मौत पर उमंग सिंघार ने पीएम को लिखा पत्र

भोपाल। मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले में बैगा आदिवासी बच्चों की मौत के मामले को लेकर नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखा है। उन्होंने मामले में केंद्र स्तर से हस्तक्षेप की मांग करते हुए प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने और प्रशासनिक जवाबदेही तय करने का आग्रह किया है। उमंग सिंघार ने पत्र में कहा कि बालाघाट के प्रभावित गांवों में करीब 30 बैगा बच्चों की मौत की सूचना सामने आई है। उन्होंने मलेरिया, खसरा व अन्य संक्रमण के साथ कुपोषण, दूषित पेयजल और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी को लेकर चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि बैगा समुदाय विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (पीवीटीजी) में शामिल है। केंद्र सरकार की पीएम-जनमन योजना के तहत ऐसे समुदायों तक स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छ पेयजल और अन्य बुनियादी सुविधाएं पहुंचाने का लक्ष्य है। ऐसे में बच्चों की मौत के मामले में योजनाओं के जमीनी क्रियान्वयन की समीक्षा जरूरी है।

200 करोड़ बार देखा गया एक वीडियो युवा भारत इस मुद्दे को सड़कों तक लेकर आया

International Youth Day के अवसर पर, Kolkata के युवा कार्यकर्ताओं ने Victoria Memorial, South Gate के सामने एक Nukkad Natak किया। यह अभियान भारत के 10 शहरों में चलाया गया। 10 मिनट के इस नाटक में Kaun Banega Crorepati की एक वायरल बातचीत से प्रेरणा ली गई। इसमें भारत के डेयरी उद्योग की सच्चाई और इससे जुड़े पशुओं के साथ होने वाले व्यवहार को सामने रखा गया। लोगों को गायों, भैंसों और उनके बछड़ों के जीवन के बारे में सोचने के लिए भी प्रेरित किया गया। इस वायरल बातचीत में कार्यक्रम के होस्ट Amitabh Bachchan ने प्रतियोगी Siddharth Sharma के साथ डेयरी पशुओं की स्थिति पर बात की। इस बातचीत को पूरे भारत में 200 करोड़ बार देखा गया है और यह दुनिया की सबसे ज्यादा देखी गई ह्रद्गद्यह्य में से एक बन गई है। बातचीत के अंत में Amitabh Bachchan ने कहा कि गाय का दूध उसके बछड़े के लिए है, न कि हमारी चाय में डालने के लिए। Kolkata के Victoria Memorial के सामने किए गए इस नुक्कड़ नाटक का मुख्य उद्देश्य डेयरी और बीफ उद्योग के बीच के उस संबंध को दिखाना था, जिसके बारे में अक्सर बात नहीं की जाती। इस पहल के जरिए हमने यह बताने की कोशिश की कि डेयरी और बीफ एक ही व्यवस्था के दो हिस्से हैं। गायों और भैंसों को मुख्य रूप से दूध के लिए पाला जाता है और बाद में उन्हें वध के लिए बेच दिया जाता है। उनके



शरीर का इस्तेमाल leather और beef उद्योग में किया जाता है। यह एक ऐसी सच्चाई है जिसे Chhaya Animal Hospital की टीम रोज देखती है। टीम इस उद्योग से शोषित bovines को बचाती है और उनकी देखभाल करती है। इनमें से कई bovines आज भी Chhaya Animal Hospital की judicial custody में हैं।

इस नाटक के जरिए public health, climate और animal protection laws से जुड़े मुद्दों पर भी लोगों का ध्यान दिलाने की कोशिश की गई। कार्यक्रम की आयोजक Arushi Bhattacharya ने कहाः

"Victoria Memorial के सामने आयोजित इस street play का उद्देश्य डेयरी और बीफ उद्योग के बीच के उस संबंध को दिखाना था, जिसके बारे में अक्सर बात नहीं की जाती। हमने यह बताने की कोशिश की कि डेयरी और बीफ एक ही व्यवस्था के दो हिस्से हैं। Chhaya Animal Hospital की टीम इस सच्चाई को करीब से देखती है, जब वह इस उद्योग से शोषित bovines को बचाती और उनकी देखभाल करती है। डेयरी से जुड़े ये मुद्दे सिर्फ पशुओं तक सीमित नहीं हैं। इनका असर public safety और environment पर भी पड़ता है। हाल ही में Supreme Court ने उन डेयरी इकाइयों पर कड़ी बात कही, जो दूध देना बंद करने के बाद गायों को छोड़ देती हैं। सड़कों पर छोड़ी गई ऐसी गायें लोगों और खुद उनके लिए खतरा बन सकती हैं। व्यस्त सड़कों पर होने वाली ऐसी दुर्घटनाएं कभी-कभी जानलेवा भी हो सकती हैं। Care of Khejuri ·Ö¤ Subhrajit Panda ने कहाः

पशुओं के साथ होने वाली cruelty, street animals के साथ दुर्व्यवहार, डेयरी उद्योग की सच्चाई और Veganism को एक compassionate way of life के रूप में सामने लाने के लिए हमने यह पहल की। Kolkata में आयोजित इस Nukkad Natak के जरिए हमने ये बातें आम लोगों तक पहुंचाने की कोशिश की। लोगों से मिली अच्छी प्रतिक्रिया और सुझावों ने हमें और मेहनत करने के लिए प्रेरित किया है। यह अभियान policymakers और institutions के साथ-साथ plant-based food systems को बढ़ावा देने की अपील करता है, ताकि animals, people और environment—तीनों के हितों की रक्षा की जा सके।

शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली गुमनाम शख्सियतों को भी याद किया जाना चाहिएः एम. डब्ल्यू. अंसारी (आई.पी.एस.)





है मां-बाप का पहले दर्जा बड़ा
जो बाद इसके हक है तो उस्ताद का

5 सितंबर को पूरा भारत शिक्षक दिवस मनाता है। यह दिन डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती के अवसर पर मनाया जाता है। उन्होंने शिक्षक, दार्शनिक और देश के सर्वोच्च संवैधानिक पदों तक पहुंचने वाली महान शख्सियत के रूप में अपने जीवन में शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया। लेकिन शिक्षक दिवस केवल अपने वर्तमान शिक्षकों को श्रद्धांजलि देने का दिन नहीं है, बल्कि यह हमें यह सोचने का अवसर भी देता है कि शिक्षा के दीपक को जलाए रखने और उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने में किन लोगों ने अपना योगदान दिया।

एक अच्छा शिक्षक केवल किताब का पाठ नहीं पढ़ाता, बल्कि विद्यार्थी में सोचने, सवाल करने, सच और झूठ में फर्क करने और समाज के लिए उपयोगी इंसान बनने की क्षमता पैदा करता है। इसी कारण शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता कहा जाता है। अब भारत की नई पीढ़ी को हर क्षेत्र में दक्ष बनाना है। लेकिन राष्ट्र की शैक्षिक बुनियाद केवल स्कूल की चारदीवारी तक सीमित नहीं है। माता-पिता, सामाजिक कार्यकर्ता, शैक्षणिक संस्थान, बुद्धिजीवी और वे सभी लोग, जो गरीब विद्यार्थियों की मदद करते हैं, किसी युवा को उच्च शिक्षा के लिए सहारा देते हैं या किसी गांव में शिक्षा की लौ जलाते हैं, इस महान मिशन का हिस्सा हैं।

हमारे शैक्षिक सफर के इतिहास में ऐसी कई शख्सियतें हुई हैं, जिनका नाम शायद सामान्य पाठ्यपुस्तकों में प्रमुखता से दर्ज न हो, लेकिन उनकी सेवाओं ने समाज की दिशा बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सावित्रीबाई फुले और शेख फातिमा इसकी उज्ज्वल मिसाल हैं। उन्नीसवीं सदी में जब लड़कियों की शिक्षा को सामाजिक विरोध का सामना करना पड़ रहा था, तब इन दोनों महिलाओं ने शिक्षा को उन वर्गों तक पहुंचाने का प्रयास किया, जिन्हें इससे वंचित रखा जाता था। उस दौर में लड़कियों के लिए स्थापित किए गए स्कूल और शिक्षा के प्रसार की मुहिम में सावित्रीबाई फुले, ज्योतिबा फुले और शेख फातिमा की महत्वपूर्ण भूमिका थी। शेख फातिमा ने अपने भाई उस्मान शेख के साथ इस शैक्षिक प्रयास को स्थान और सहयोग भी उपलब्ध कराया।

यह इतिहास हमें एक बहुत महत्वपूर्ण सबक देता है कि शिक्षा किसी एक धर्म, जाति या वर्ग की विरासत नहीं, बल्कि हर इंसान का अधिकार और पूरे समाज की जिम्मेदारी है। सावित्रीबाई फुले और शेख फातिमा का साझा संघर्ष इस बात की खूबसूरत मिसाल है कि शिक्षा और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में विभिन्न समुदायों के लोग मिलकर काम करें तो समाज में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। आज के दौर में जब समाज को आपसी सम्मान, सहिष्णुता और एकता की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है, तब इस साझा शैक्षिक विरासत को याद करना भी जरूरी है।

शेख फातिमा और सावित्रीबाई फुले ने, तथा शेख उस्मान ने उनकी मदद करके, उस दौर में ऐसा ऐतिहासिक कार्य किया जिसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। आज हम आधुनिक युग में इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। लेकिन जरा विचार कीजिए कि इतने वर्षों पहले का वह समय कैसा रहा होगा और उनके सामने कितनी चुनौतियां रही होंगी। इसके बावजूद उन्होंने कठिन परिस्थितियों में एकता की मिसाल कायम करते हुए महिला शिक्षा के लिए जो काम किया, वह निश्चित रूप से हर दौर में सराहनीय और प्रेरणादायक है।

आज हमारे सामने शिक्षा के क्षेत्र की चुनौतियों की प्रकृति बदल चुकी है। इंटरनेट, मोबाइल फोन, एआई और डिजिटल माध्यमों ने ज्ञान तक पहुंच को आसान बना दिया है। एक बच्चा कुछ ही सेकंड में दुनिया भर की जानकारी हासिल कर सकता है, लेकिन जानकारी और शिक्षा में अंतर है। जानकारी मोबाइल और कंप्यूटर से मिल सकती है, मगर जानकारी को समझने, सही और गलत में अंतर करने, नैतिक निर्णय लेने और उसे मानवता के हित में इस्तेमाल करने की सीख एक अच्छा शिक्षक ही दे सकता है। इसलिए तकनीक को शिक्षक का स्थान लेने के बजाय शिक्षक के हाथ में एक प्रभावी साधन बनना चाहिए।

वर्तमान दौर की एक बड़ी चुनौती यह भी है कि विकास के बावजूद हर बच्चे को समान शैक्षिक अवसर हासिल नहीं हैं। गरीब परिवारों के बच्चे, ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी, वंचित वर्ग और विशेष रूप से वे बच्चियां, जिन्हें आर्थिक या सामाजिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, आज भी हमारी विशेष चिंता और ध्यान की हकदार हैं। यदि हम वास्तव में शिक्षक दिवस को सार्थक बनाना चाहते हैं तो हमें यह संकल्प लेना होगा कि कोई बच्चा केवल गरीबी के कारण शिक्षा से वंचित न रहे और कोई बच्ची केवल सामाजिक बाधाओं के कारण अपने सपनों से समझौता न करे।

जरूरत इस बात की है कि शिक्षक दिवस के अवसर पर केवल बड़े और प्रसिद्ध नामों को ही याद न किया जाए, बल्कि अपने-अपने क्षेत्रों में चुपचाप शिक्षा के लिए काम करने वाले गुमनाम शिक्षकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, अभिभावकों और शिक्षा-सेवियों को भी तलाशा जाए और उनका उत्साह बढ़ाया जाए। किसी गरीब विद्यार्थी की फीस भरना, किसी जरूरतमंद बच्ची को किताबें उपलब्ध कराना, किसी युवा को छात्रवृत्ति की जानकारी देना या किसी बस्ती में शिक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करना भी वास्तव में भविष्य का निर्माण करना है। और यह काम माता-पिता के बाद एक अच्छे शिक्षक की सबसे बड़ी जिम्मेदारियों में से एक है।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि शिक्षा का उद्देश्य केवल अच्छी नौकरी हासिल करना नहीं, बल्कि अच्छा इंसान बनना और एक बेहतर समाज का निर्माण करना भी है। ज्ञान के साथ नैतिकता, चरित्र, सहनशीलता, मानवता और अपने देश के प्रति जिम्मेदारी का भाव पैदा करना हमारी शैक्षिक प्राथमिकताओं का हिस्सा होना चाहिए।

आज शिक्षक दिवस के अवसर पर हम डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन सहित सभी प्रसिद्ध और गुमनाम शिक्षकों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और सावित्रीबाई फुले, शेख फातिमा, उनके भाई उस्मान शेख तथा उन जैसे तमाम शिक्षकों और शिक्षा-सेवियों को भी याद करते हैं, जिन्होंने अपने समय की कठिनाइयों के बावजूद शिक्षा का रास्ता चुना। उनका जीवन हमें यह संदेश देता है कि एक किताब, एक शिक्षक और एक ईमानदार प्रयास न केवल किसी एक जिंदगी, बल्कि पूरी पीढ़ी का भविष्य बदल सकता है।

शिक्षक दिवस का सबसे बेहतर उपहार यही होगा कि हम किसी एक बच्चे का हाथ थामें, उसे शिक्षा से जोड़ें और यह संकल्प लें कि हमारे समाज में शिक्षा का दीपक किसी घर, किसी बस्ती और किसी वर्ग में गरीबी या वंचना के कारण बुझने नहीं देंगे।

स्त्री विमर्श और बदलते संस्कारों के कथानक पर केंद्रित 'अफ़साने का अफ़साना' संगोष्ठी सम्पन्न



मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद एवं संस्कृति विभाग के तत्त्वावधान में आयोजित साहित्यिक श्रृंखला 'अफ़साने का अफ़साना' के अंतर्गत 'स्त्री विमर्श और संस्कारों के बदलते हुए कथानक' विषय पर विशेष संगोष्ठी आयोजित की गई। देश के विभिन्न शहरों से आए वरिष्ठ साहित्यकारों एवं कथाकारों ने स्त्री जीवन, बदलते पारिवारिक संबंधों, सामाजिक मूल्यों और समकालीन कथा साहित्य के विविध पक्षों पर विचार व्यक्त किए तथा अपनी कहानियों का पाठ किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार एवं मध्यप्रदेश के राज्य निर्वाचन आयुक्त तथा सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी श्री मनोज श्रीवास्तव ने की। उन्होंने कहा कि स्त्री-विमर्श का प्रश्न केवल वैधानिक अधिकारों का नहीं, बल्कि समाज द्वारा 'स्त्रीत्व' की वैचारिक संरचना का भी है। संस्कारों के माध्यम से सामाजिक पाबंदियां स्त्री की इच्छाओं और निर्णयों की सीमाएं तय करती रही हैं। मंटो, इस्मत चुगताई और राजेंद्र सिंह बेदी के साहित्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि स्त्री-परवरिश के प्रतिमान 'आज्ञाकारिता' से 'आत्मनिर्भरता' तक पहुंचे हैं, किंतु जीवन के निर्णायक फैसले लेने की वास्तविक स्वायत्तता आज भी सीमित है। 'उमराव जान अदा' के संदर्भ से उन्होंने कहा कि समाज स्त्री की प्रतिभा को सराहता तो है, लेकिन उसे स्वतंत्र और गरिमामयी व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करने में अब भी संकोच करता है। प्रारंभ में मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी की निदेशक डॉ. नुसरत मेहदी ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कथा साहित्य अपने समय और समाज की बदलती तस्वीर को अत्यंत संवेदनशील ढंग से दर्ज करता है। आज स्त्री की सामाजिक भूमिका, पारिवारिक रिश्तों और जीवन-मूल्यों में तेजी से हो रहे परिवर्तन को समझने में कथा-साहित्य महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्होंने कहा कि 'अफ़साने का अफ़साना' बदलते समाज, स्त्री चेतना और पीढ़ियों के बीच नए होते संबंधों पर सार्थक संवाद का प्रयास है। अलीगढ़ से आए प्रसिद्ध साहित्यकार एवं आलोचक सिराज अजमली ने कहा कि पश्चिमी नारीवादी आंदोलन के प्रभावों को उपमहाद्वीप के विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में समझने की आवश्यकता है। उन्होंने उर्दू साहित्य में महिलाओं के अपेक्षाकृत कम प्रतिनिधित्व तथा अनेक प्रतिभाशाली लेखिकाओं को साहित्यिक इतिहास और आलोचना में यथोचित स्थान न मिलने का उल्लेख किया। साथ ही आधुनिक तकनीक और तीव्र विकास से मानव जीवन, भावनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों में आए बदलावों पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता बताई। दिल्ली से आईं वरिष्ठ साहित्यकार एवं कथाकार निगार अज़ीम ने कहा कि पिछले दो दशकों में स्त्री-अभिव्यक्ति में व्यापक परिवर्तन आया है। पारंपरिक लाचारी और बेबसी के स्थान पर आज की स्त्री में साहस, स्वाभिमान और आत्मविश्वास दिखाई देता है तथा वह अपने दैहिक और अस्तित्वगत अधिकारों में स्वायत्तता की पक्षधर है। उन्होंने कहा कि गरिमा और संतुलन के साथ आगे बढ़ता यह बदलाव समाज में न्याय, समता और मानवीय गरिमा को सुदृढ़ करेगा। संगोष्ठी में प्रतिष्ठित कथाकारों ने अपनी कहानियों का पाठ भी किया।

शहीद क्रांतिकारी नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन और शहीद क्रांतिकारी नवाब इक़बालमन्द ख़ाँन



1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उत्तर प्रदेश के जनपद फर्रूखाबाद का योगदान अत्यंत गौरवशाली, अप्रतिम और स्वर्णिम रहा है। ईस्ट इंडिया कंपनी के औपनिवेशिक शासन को उखाड़ फेंकने के लिए जहाँ आम आवाम ने अपने प्राणों की आहुति दी, वहीं फर्रूखाबाद के नवाब घराने ने इस महासंग्राम का नेत्तृत्व करते हुए अभतूपुर्व स्वाभिमान, साहस और देशभक्ति का परिचय दिया। इसी ऐतिहासिक और रक्तिम सघंर्ष की श्रृंखला में नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन का नाम एक निर्भीक क्रांतिकारी, विद्वान, साहित्य-प्रेमी और अमर शहीद के रूप में दर्ज है। नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन फर्रूखाबाद के नवाब इनायत हुसैन ख़ाँन के पुत्र तथा अंतिम नवाब तफ़ज़्ज़ुल हुसैन ख़ाँन के सगे भाई थे। उनके पिता नवाब इनायत हुसैन ख़ाँन अपने समय के अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्तित्व थे और अंतिम मुगल सम्राट मोहम्मद बहादुर शाह %ज़फ़र% के दिल्ली दरबार से सम्मानित थे। नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन को उनकी अदम्य वीरता के लिए %हज़बर-जंग% (अर्थात शेर की तरह बहादुर) की उपाधि प्राप्त थी। नवाब साहब को उर्दू और फ़ारसी के साथ-साथ संस्कृत भाषा में भी गहरा ज्ञान प्राप्त था। नवाब तफ़ज़्ज़ुल हुसैन ख़ाँन के सगे भाई होने तथा पारिवारिक साहित्यिक वातावरण के कारण उन्हें काव्य-साहित्य से विशेष लगाव था। उनका तख़ल्लुस (उपनाम) %सईद% था और उनकी अधिकांश काव्य-रचनाएँ फ़ारसी एवं उर्दू ज़बान में थीं। फ़र्रुखाबाद के मुंशी अल्ताफ़ उर रहमान साहब की हस्तलिखित बयाज़ (डायरी/काव्य-सग्रंह) में नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन सईद की हस्तलिखित ग़ज़ल का साक्ष्य प्राप्त होता है-

न तड़पाओ दिल को यह मजबरू है,
मोहब्बत से तेरी यह दिल चरू है।
सईद अपनी मज़ी भला कब चली,
वो सुनता नहीं मेरी मगरूर है।

1857 ई. की क्रांति से पूर्व की एक ऐतिहासिक घटना नवाब साहब के अदम्य स्वाभिमान और ब्रिटिश अधिकारियों के प्रति उनके बेबाक रवैये को दर्शाती है। 1857 के शुरुआती दिनों में एक दिन नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन अपनी सुबह की इबादत (प्रार्थना) में लीन थे। उसी समय ब्रिटिश कलेक्टर %लडंसे% उनके समक्ष



नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन

आकर खड़ा हो गया और अभद्र व अनचुिचित भाषा का प्रयोग करने लगा,ताकि नवाब साहब भयभीत होकर इबादत छोड़ दें। इबादत से फ़ारिग होने के बाद नवाब साहब ने बिना किसी भय के अपने सेवकों को कड़ा हुक्म दिया- इस बदंर की टोपी गिरा दो और कान पकड़कर बाहर निकाल दो। आदेश की तत्काल तामील हुई और सेवकों ने कलेक्टर को कान पकड़कर बाहर निकाल दिया। इस अपमानजनक घटना के बाद कलेक्टर लडंसे से के मन में नवाब साहब और उनके घराने के प्रति प्रतिशोध की भावना सुलग ने लगी। जनू 1857 में जब क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित हुई, तब नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन तथा उनके पुरे घराने ने स्वतत्रंता संग्राम में सक्रिय और अग्रणी भुमिका निभाई। फर्रूखाबाद से अंग्रेजों का नियंत्रण समाप्त कर दिया गया और क्रांतिकारियों को सैनियें व आर्थिक सहायता प्रदान की गई। नवाब ग़ज़नफ़र खांन ने नवाब तफ़ज़्ज़ुल हुसैन ख़ाँन, नवाब सखावत हुसैन ख़ाँन, नासिर ख़ाँन, नवाब इक़बालमन्द ख़ाँन तथा स्थानीय योद्धाओं के साथ मिलकर ब्रिटिश सेना के दाँत खट्टे किये। क्रांति के दमन के पश्चात ब्रिटिश हुकूमत ने फर्रूखाबाद और फतेहगढ़ क्षेत्र में व्यापक नरसंहार और दमन चक्र चलाया। नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन पर मुकदमा चलाया गया और अतंत: 13 सितंबर 1862 ई. को उन्हें फर्रूखाबाद के घमुना स्थित पीपल के पेड़ पर सार्वजर्वनिक रूप से फाँसी दे दी गई। पीपल के वक्षृ पर फाँसी का फंदा चमू कर नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन देश की स्वाधीनता की वेदी पर अमर शहीद (शहूादा) हो गए। ऐतिहासिक पुस्तको और सरकारी गजेटियर्स के साक्ष्यों के अनुसार फर्रूखाबाद के क्रांतिकारी घराने के अन्य प्रमुख नायकों की शहादतों का विवरण इस प्रकार रहा- नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन%सईद% को 13 सितंबर 1862 ई.घमुना स्थित पीपल के पेड़ पर फाँसी दी गई। और नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन खान के भाई नवाब सखावत हुसैन ख़ाँन को जनमानस में खौफ पैदा करने के लिए अंग्रेजों ने उन्हें सरेआम फांसी देने का क्रूर फैसला किया। दिसंबर 1863 को फर्रुखाबाद के घुमना बाजार में एक विशाल इमली के पेड़ से लटकाकर उन्हें सरेआम फांसी दे दी गई। नवाब इक़बालमन्द ख़ाँन को सन् 1862 में जिला स्कूल के पीपल के पेड़ पर फाँसी पर लटकाकर शहीद कर दिया। अंग्रेज़ी हुकूमत ने इनकी फांसी से पहले इनके पुरे शरीर पर सुअर की चर्बी मिली गयी और उनके महल को ध्वस्त कर दिया गया और उसे 6000 रुपए में नीलाम कर दिया था। जिसे आज हरियट महल के रुप में जानते हैं। उनके मकबरे के अवशेष आज भी वहां स्थित है। अंग्रेज़ी हुकूमत ने नासिर खाँ को भी घुमना के पीपल के पेड़ पर फाँसी दी गयी। उनकी लाश 3 दिन तक लटकती रही। बाद में उनकी लाश को जसमई के कब्रिस्तान में दफना दिया गया। शाम होते ही सैकड़ों हिन्दू-मुसलमान उनकी कब्र पर चिराग जलाकर उनको याद करते। निरन्तर भीड़ बढ़ने से परेशान होकर अंग्रेज अधिकारियों ने रात में ही कब्र से उनकी लाश निकलवा कर फतेहगढ़ किले के अन्दर खौलते हुये चूने में डालकर नष्ट कर दी जिससे उनकी कब्र भी नहीं बन सकी। नासिर खाँ के महल को तोपों से उड़ा दिया गया। उनकी सारी जायदाद जब्त कर ली गयी। यह वही नासिर खाँ थे जिन्होंने कादरी दरवाजा पर रखी तोप को अपने कन्धे पर उठाकर अंग्रेजों को खदेड़ा था। बाद में अमृतपुर में उन्हें धोखे से गिरफ्तार करके चारपाई में बाँधकर फतेहगढ़ लाया गया था। लार्ड मेचिल ने %फतेहगढ़ का गदर% पुस्तक में लिखा है- %नासिर खाँ एक बहादुर और ताकतवर इन्सान था। उसने तलवार खींचकर हिन्दू और मुसलमानों को कसम दी थी कि तुम लोग इकट्ठा होकर अंग्रेजों को निकाल दो। उनके महल तथा बाग को अँग्रेज कलक्टर लडंसे ने अपने नाम पर लिंजीगंज और उनके भाई नादिर खाँ की जायदाद में नगर मजिस्ट्रेट ने अपने नाम पर ग्राटगंज रखा। आजादी के इस महासंग्राम में सर्वाधिक योगदान फर्रुखाबाद के आखिरी नवाब तफज्जुल हुसैन खाँ का था। उन्होंने नौगवों के नृपति सिंह लोधी तथा छबीलाराय लोधी के साथ मिलकर अँग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिये। इसमें नेपाल की ओर पलायन करने वाले नृपति सिंह के बारे में कुछ भी पता नहीं लगा। लेकिन 10 मई 1859 को तीन अँग्रेज जजों के आयोग द्वारा तफज्जुल हुसैन खाँ को मौत की सजा दी गयी। बाद में प्रीवी काउन्सिल में अपील करने पर तफज्जुल हुसैन खाँ को उनकी इच्छा के मुताबिक इस शर्त के साथ मक्का के लिये निर्वासित कर दिया गया कि यदि उने कभी भारत की धरती पर पैर रखे तो पुन: उनकी फाँसी की सजा बहाल हो जायेगी। मक्का में ही इस नवाब की अभावों के बीच 19 नवंबर 1882 ई. मृत्यु हो गयी। इससे पहले 20 अप्रैल 1859 को उनके घर की सारी सामग्री नीलाम कर दी गयी। क्रान्ति समाप्त होने के बाद भी फर्रुखाबाद और फतेहगढ़ में 4432 लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। सरकारी गजेटियर्स के विवरण के अनुसार यहाँ के 161 लोगों को फांसी दी गयी, जिसमें 80 हिन्दू और 80 मुसलमान थे और एकमात्र महिला थी- याकूतगंज की वीरांगना कुमारी अमीना खातून। जबकि फांसी पाने वाले और काला पानी भेजे जाने वाले देशभक्तों की वास्तविक बलिदानियों की संख्या हज़ारों में थी। शहीद नवाब ग़ज़नफ़र हुसैन ख़ाँन %सईद% न केवल एक वीर योद्धा थे, बल्कि भारतीय संस्कृति , साहित्य और भाषाई सद्भाव के प्रतीक भी थे। कलेक्टर लडंसे को दिया गया उनका मंहुतोड़ जवाब और 1857 की क्रांति में उनका अमर बलिदान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में सदैव स्वर्ण अक्षरों में अकिंत रहेगा। संदर्भ ग्रंथ सूची- 1.1857 के मुजाहिद शौहरा (उर्दू), मौलाना इमदाद साबरी, पृष्ठ संख्या 250,252, मकतबा शाहिरा, दिल्ली, 1959. 2.फर्रुखाबाद का प्राचीन और वर्तमान गौरवशाली इतिहास, डॉ रामकृष्ण राजपूत, पृष्ठ संख्या 18,19, फर्रुखाबाद मोहत्सव आयोजन समिति 2014. 3.अन्य जानकारी हमें नवाब सखावत हुसैन के वंशज प्रपौत्र नवाब काजिम हुसैन खान, फर्रुखाबाद 25-8-26 से प्राप्त हुई। हसरत अली शेरपुर जिला मुज़फ्फ़रनगर उत्तर प्रदेश फोन नवम्बर 8580533689

कायस्थम द्वारा अपने घर में सम्मानित होने पर अभिभूत हुए सेवानिवृत्त, वृद्ध शिक्षक



भोपाल। शिक्षक दिवस पर कायस्थ समाज की अग्रणी संस्था कायस्थम से अपने घर पर कायस्थम शिक्षक सम्मान पाकर वर्षों पहले सेवानिवृत हुए वृद्ध , शिक्षक अभिभूत हो उठे। कायस्थम ने आज उन्हें उनके घर पहुंचकर स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र, चित्रगुप्त चालीसा, तुलसी का पौधा और साहित्य भेंटकर सम्मानित किया। कायस्थ समाज के सेवानिवृत वृद्ध शिक्षकों को सम्मानित करने की पहल इस साल शिक्षक दिवस से शुरू की गई है। कायस्थम के अध्यक्ष प्रलय श्रीवास्तव के अनुसार शिक्षकों को सम्मानित करने की परम्परा भविष्य में भी जारी रखी जाएगी और अधिक शिक्षकों को समारोहपूर्वक कायस्थम शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया जायेगा । कायस्थम ने आज प्रतिकात्मक रूप से जिन 5 शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया, उनमें सर्वश्री माधव प्रसाद गौड़ प्रधानाध्यापक डबरा(2006), श्री ओ.के. सक्सेना मॉडल टी .टी.नगर,निशातपुरा हायर सेकंडरी स्कूल(1998), श्रीमती मधु सक्सेना कन्या उमावि गोविंदपुरा (2013), श्रीमती शकुंतला श्रीवास्तव प्राचार्या कमला नेहरू, सरोजिनी नायडू कन्या उमावि(2006) और श्रीमती शैफालिका श्रीवास्तव केंद्रीय विद्यालय गुना(2015) शामिल हैं।

एम. ए. एकेडमी, तुर्कमानपुर में मनाया गया शिक्षक दिवस



गोरखपुर हर साल की तरह इस साल भी स्वतंत्र भारत के प्रथम उप राष्ट्रपति एवं द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्म दिवस के अवसर पर शिक्षक दिवस सम्मान समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के बच्चों के द्वारा बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के इस अवसर पर सबसे पहले अमायरा आकिब ने कुरान की तिलावत की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संस्था के डायरेक्टर डॉ. मोहम्मद आकिब अन्सारी ने बच्चों को संबोधित करते हुए बताया कि अपने अभिभावकों की रिस्पेक्ट के साथ-साथ अपने से सभी बड़ों का आदर और छोटों के साथ मोहब्बत अगर अपनी जिंदगी का मामूल बना लें तो सभी बच्चों की जिंदगी कामयाब हो जाएगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश पाठ्यक्रम समिति के सदस्य एवं संस्था के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. एहसान अहमद ने सभी बच्चों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए सफल एवं कामयाब जीवन की शुभकामनाएं पेश कीं। विशेष आमंत्रित अतिथि अदीबा मैडम ने भी बच्चों को मुबारकबाद पेश किया। दिग्गज पत्रकार सुनील मणि त्रिपाठी ने भी बच्चों को संबोधित करते हुए भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के बारे में विस्तार से बताया। विद्यालय की प्रधानाचार्या सीमा परवीन ने सभी बच्चों को मुबारकबाद पेश किया। विद्यालय की उप प्रधानाचार्या निदा फात्मा ने सभी बच्चों को संबोधित करते हुए बताया कि किसी भी बच्चों के जीवन की प्रथम शिक्षिका होती है, इसलिए उनका आदर और रिस्पेक्ट करना सभी बच्चों का दायित्व है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि नसीम अशरफ फारुकी, सुबिया खान, शमा खान, तहजीब, सानिया, समीरा, सना ने भी बच्चों को संबोधित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन मोना और शिफा ने किया। कार्यक्रम का सफल कवरेज रहमत अली ने किया। कार्यक्रम के आयोजक सिमरा, सना, इकरा और सायमा ने अपने आने वाले सभी मेहमानों का शुक्रिया अदा किया। इस अवसर पर वाटरमैन हाजी जलालुद्दीन कादरी, सेराज अहमद, अरशदुल्लाह आदि लोगों के साथ-साथ विद्यालय परिवार के सभी बच्चों ने शिरकत की।

किसान कल्याण वर्ष के आयोजनों के अच्छे परिणाम आएंगे

भोपाल। इस दौरान उन्होंने आशा व्यक्त की कि भगवान बलराम की कृपा से किसान कल्याण वर्ष केआयोजनों के अच्छे परिणाम आएंगे। कार्यक्रम में मंत्री शुक्ला और विधायक भिण्ड नरेंद्र सिंह कुशवाह द्वारा अन्य अतिथियों की उपस्थिति में दबोहामोड़ के रामसनेही शर्मा को फलोद्यान नर्सरी, बडेरा के पर्वत सिंह को नर्सरी, टुडिला के जगदीश सिंह कंसाना को प्राकृतिक खेती, मानगढ़ के रंजीत सिंह को जैविक खेती, बरूअनपुरा के गंगाराम बघेल को जैविक खेती, सोनेलाल का पुरा के अजय सिंह को केंचुआ खाद उत्पादन, उदन्नखेडा के लक्ष्मण सिंह नरवरिया को जैविक खेती, सैपुरा के संदीप सिंह को उन्नत तकनीकी से टमाटर एंव मिर्च उत्पादन, क्यारीपुरा के कुलदीप सिंह भदौरिया को जैविक खेती और बड़ागांव नं. 1 के गुरुप्रसन्न राजावत को देशी बीज संरक्षण के लिए शाल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में जिले के मेधावी विद्यार्थियों- निराली बघेल, कृतिका दुबे, प्रिंसी, साक्षी शर्मा, छवि परमार, सोनम देवी, साहिल यादव और अभय शर्मा को कक्षा 10वी और 12वी की बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। समारोह स्थल पर कृषकों की सुविधा हेतु कृषक पंजीयन,ई-केवाईसी तथा फॉर्मर आईडी पंजीयन के विशेष स्टाल लगाए गए थे। कार्यक्रम में पशुपालन और डेयरी विभाग, कृषक कल्याण विभाग,कृषि अभियांत्रिकी विभाग,उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग,मत्स्य विभाग और जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित भिण्ड द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई जिसके माध्यम से विभागीय उपलब्धियों और शासकीय योजनाओं की जानकारी प्रदान की गई। स्वसहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों का भी प्रदर्शन और विक्रय किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी गई।

निर्माण कार्यों की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं,लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी

भोपाल के अम्बेडकर सेतु की मरम्मत का पूरा खर्च ठेकेदार से होगा वसूल

भोपाल। लोक निर्माण विभाग में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता से किसी भी स्तर पर समझौता नहीं किया जाएगा और ठेकेदार की लापरवाही किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं होगी।विभाग ने बताया कि भोपाल शहर में गणेश मंदिर से गायत्री मंदिर तक निर्मित फ्लाईओवर (अम्बेडकर सेतु) की मरम्मत एवं संधारण पर होने वाला संपूर्ण व्यय संबंधित ठेकेदार संस्था मेसर्स वी.के.एस.सी. इंफ्राप्रोजेक्ट्स लिमिटेड, भोपाल से अनुबंध की शर्तों के अनुसार वसूल किया जाएगा। मरम्मत की वास्तविक लागत के साथ ही उस पर 20 प्रतिशत क्षतिपूर्ति राशि भी ठेकेदार संस्था से वसूली जाएगी। इस कार्य के लिए विभाग द्वारा न तो कोई पृथक बजट आवंटित किया गया है और न ही विभाग पर किसी प्रकार का अतिरिक्त वित्तीय भार पड़ेगा। अम्बेडकर सेतु का निर्माण 31 दिसंबर 2024 को पूर्ण किया गया था। अनुबंध के अनुसार कार्य की दोष दायित्व अवधि 30 दिसंबर 2029 तक निर्धारित है। इस अवधि में निर्माण अथवा संधारण से संबंधित कमियों को दूर करने की जिम्मेदारी संबंधित ठेकेदार संस्था की है। फ्लाईओवर के निर्माण के बाद इसकी बियरिंग कोट में खराबी सामने आई थी, जिसका सुधार ठेकेदार संस्था द्वारा कराया गया था। वर्तमान वर्षाकाल में बियरिंग कोट में पुन: खराबी परिलक्षित होने के साथ ही संधारण से जुड़ी अन्य कमियां भी सामने आईं। निरीक्षण के दौरान फ्लाईओवर के ड्रेनेज स्पाउट तथा रेनवॉटर डाउनटेक पाइपों के चोक एवं क्षतिग्रस्त होने के कारण वर्षाजल की निकासी बाधित पाई गई। इसके कारण कुछ स्थानों पर वर्षाजल सीधे सड़क पर गिर रहा था। एक्सपेंशन जॉइंट से जल रिसाव, फ्लाईओवर के नीचे स्थित सर्विस रोड पर जलभराव, गड्ढों का निर्माण तथा कुछ स्थानों पर पानी रुकने जैसी समस्याएं भी सामने आईं। विभाग द्वारा इन सभी कमियों को सूचीबद्ध करते हुए ठेकेदार संस्था को समय-सीमा में सुधार कार्य कराने के निर्देश दिए गए। लोक निर्माण विभाग ने ठेकेदार संस्था को 31 जुलाई 2026 तथा पुन: 11 अगस्त 2026 को आवश्यक सुधार एवं संधारण कार्य कराने के निर्देश जारी किए थे। अनुबंध की शर्तों के अनुसार ठेकेदार संस्था को 15 दिवस के भीतर सभी कमियां दूर करनी थीं, लेकिन निर्धारित अवधि में आवश्यक सुधार कार्य पूर्ण नहीं किया गया। अनुबंध के प्रावधानों के अनुसार ठेकेदार संस्था द्वारा निर्धारित समय में सुधार कार्य नहीं किए जाने की स्थिति में विभाग को संबंधित कार्य उसके हर्जे-खर्चे पर कराने का अधिकार है। इसके तहत कार्य पर होने वाली संपूर्ण लागत तथा उस लागत पर 20 प्रतिशत क्षतिपूर्ति राशि ठेकेदार संस्था से वसूल की जाती है। इन्हीं प्रावधानों के अंतर्गत विभाग द्वारा अम्बेडकर सेतु की खामियां दूर करने के लिए 4.69 करोड़ रुपये की निविदा आमंत्रित की गई थी। इस कार्य के लिए विभाग द्वारा पृथक से कोई बजट,अतिरिक्त आवंटन अथवा अतिरिक्त व्यय प्रस्तावित नहीं किया गया है। यहां यह उल्लेखनीय है कि डीएलपी अवधि में विभाग के डुपास ठेकेदार संस्था की परफॉर्मेंस गारंटी की बैंक गारंटी जमा रहती है।

जिला परिषद उर्दू छात्राओं की प्राथमिक शाला रसूलपुर में उत्साहपूर्वक मनाया गया शिक्षक दिवस



रावेर (सलाहुद्दीन अदीब) रसूलपुर, तहसील रावेर, जिला जलगांव -शिक्षक दिवस के अवसर पर जिला परिषद उर्दू छात्राओं की प्राथमिक शाला रसूलपुर, तहसील रावेर, जिला जलगांव में शिक्षक दिवस बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अय्युब पहलवान, मुस्लिम पंचाध्यक्ष, रसूलपुर ने की। कार्यक्रम की शुरुआत हाजी शेख शब्बीर के हाथों प्रतिमा पर पुष्पहार अर्पित कर श्रद्धांजलि देने के साथ हुई। इस अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षकों का शाल एवं पुष्पगुच्छ देकर सम्मान किया गया। मुख्याध्यापक शेख कमाल सर का विशेष सत्कार हाजी अय्यूब पहलवान द्वारा शाल एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर किया गया। इसी अवसर पर शेख शरीफ सर, तबरेज सर, इस्हाक सर, अकरम अली सर, अकील सर एवं आसिफ तड़वी सर का भी शाल एवं पुष्पगुच्छ देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में शिक्षकों के शैक्षणिक एवं सामाजिक योगदान को सराहा गया। छात्राओं ने अपने शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, अनुशासन और व्यक्तित्व विकास की दिशा देने के महत्व पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। मुख्याध्यापक शेख कमाल सर के मार्गदर्शन तथा शिक्षक, छात्राओं एवं उपस्थित मान्यवरों के सहयोग से कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

दैनिक हिन्दी एक्शन भोपाल
RNI No: 67078/97
Mobile: 9425011299
Email:urduaction@gmail.com
संस्थापाक:
स्वर्गीय डॉ हा.माजिद हुसैन
एवं स्वर्गीय श्रीमति नजमा बेगम
मालिक, प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक
श्रीमति सदिया जावेद द्वारा
एक्शन प्रिन्टर्स, 108 डायनामिक सेन्टर जोन-1, एम.पी.नगर भोपाल से मुद्रित एवं 141/301 सिद्धार्थ होम्स, जोन-2, एम.पी.नगर, भोपाल 462001 से प्रकाशित
सह सम्पादक इकबाल माजिद,
मो: 9425013661
प्रबंध सम्पादक जावेद माजिद,
मो: 9425011299
(किसी भी विवाद के संबंध में सुन्चाई का अधिकार क्षेत्र न्यायालय भोपाल रहेगा)

विकास कार्यों का लाभ जेनजी और जेन अल्फा को मिलेगा : उप मुख्यमंत्री शुक्ल



भोपाल। अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय में पंचकोष समग्र व्यक्तित्व विकास की भारतीय दृष्टि विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की जा रही है। कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि संस्कारों के बिना सुगंध के फूल जैसी है। शिक्षित होने के साथ-साथ संस्कारवान होना आवश्यक है। आज जो विकास के प्रयास हो रहे हैं उनका पूरा लाभ जेनजी और जेन अल्फा को मिलेगा। भारत को 2047 तक विश्वगुरू और आर्थिक महाशक्ति बनाने का संकल्प देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लिया है। इस संकल्प को पूरा करने की जिम्मेदारी युवाओं पर है। युवा शिक्षित होने के साथ-साथ संस्कारवान बने इसके लिए पंचकोष समग्र व्यक्तित्व विकास की भारतीय दृष्टि को अपनाना आवश्यक है। अच्छे संस्कार सांस्कृतिक मूल्य और सकारात्मक दृष्टिकोण युवाओं को सही लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक होगा। कार्यशाला में जो गुरू ज्ञान दिया जा रहा है उसे विद्यार्थी अपने जीवन में उतारे तभी जीवन सफल होगा। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि जीवन के उच्च लक्ष्य तय करने के साथ हमे जो प्राप्त है वहीं पर्याप्त है कि आत्मसंतुष्टि होनी चाहिए। जीवन को सही दिशा न मिलने पर युवा भटकर गलत रास्ते में चल पड़ते हैं। देश तेजी से विकास कर रहा है। देश विरोधीतत्व युवाओं को शाफ्टकॉर्नर बनाकर उनको पथ से विमुख करने का प्रयास कर रहे हैं। युवा इनसे सावधान रहें। देश का युवा सही राह पर चल पड़ा तो दुनिया में राज करने से उसे कोई नहीं रोक सकता है। अच्छे संस्कार और जीवन की सही दिशा ही हमे सफलता देगी। कार्यशाला में सांसद श्री जनार्दन मिश्रा ने कहा कि सनातन परंपरा के मूल्य और वैदिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान ने भी प्रमाणित किया है। शरीर और मन को संतुलित रखने पर पूरा जीवन संतुलित हो जाता है। इसके लिए योग, ध्यान और प्राणायाम आवश्यक है। पूरी दुनिया तनाव प्रबंधन के लिए इसका उपयोग कर रही है। युवा पीढ़ी प्राचीन ज्ञान के अच्छे मूल्यों को अपनाये। प्राचीन ग्रांथों में भी भ्रमित करने के लिए भी मिलावट कर दी गई है। सही ज्ञान को अपनाने पर ही आत्मबोध और आत्मचिंतन से आत्मसंतुष्टि होगी। कार्यशाला में श्री शर्मा ने कहा कि समाज को बदलना है तो शिक्षा को बदलना होगा। आत्मनिर्भर और विकसित भारत के लिए शिक्षा, संस्कृति का उत्थान आवश्यक है। कार्यशाला में विवेकानंद विश्वविद्यालय सागर के कुलगुरू डॉ. अजय तिवारी ने कहा कि गुरू ही शिष्य को सही मार्ग दिखलाते हैं। कबीरदास जी ने कहा है कि समुद्र की स्याही, धरती के सभी पेड़ों की कलम बनाकर धरती को किताब मानकर यदि गुरू का महात्म लिखा जाय वह भी कम होगा। जब शिष्य गुरू से श्रेष्ठ बन जाता है तभी गुरू को सच्चा सुख मिलता है। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुल गुरू श्री राजेन्द्र कुड़रिया ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला के उद्देश्यों की जानकारी दी। उन्होंने यह कार्यशाला विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए नये द्वार खोलेगी।

इदारिया (संपादकीय)

श्रीराम मंदिर अयोध्या में प्रारंभ हुआ संस्थागत युग का नया अध्याय

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है बल्कि यह आधुनिक भारत के सबसे शक्तिशाली धार्मिक-सांस्कृतिक प्रतीकों में बदल चुका है। इसलिए जब भारतीय वायुसेना के पूर्व एयर मार्शल जितेंद्र कुमार मिश्र को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का पहला पूर्णकालिक सीईओ बनाया जाता है, तो इसे महज एक प्रशासनिक नियुक्ति मानकर छोड़ देना शायद इस घटनाक्रम के वास्तविक राजनीतिक और संस्थागत अर्थ को छोटा करके देखना होगा। इस बड़ा अभिप्राय यह है कि क्या अयोध्या में शुरू हो रहा है 'नए संस्थागत युग' का अध्याय? देखा जाए तो 2 सितंबर 2026 को ट्रस्ट ने एयर मार्शल (सेवानिवृत्त) जितेंद्र मिश्र की नियुक्ति की। वे अप्रैल 2026 में सेवानिवृत्त हुए थे और पश्चिमी वायु कमान के एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ रह चुके हैं। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पश्चिमी मोर्चे की वायु-सैन्य कमान से उनका जुड़ाव इस नियुक्ति को और अधिक प्रतीकात्मक महत्व देता है लेकिन असली कहानी उनकी सैन्य पृष्ठभूमि से आगे शुरू होती है। इसलिए इसे विभिन्न मानकों पर आंकना होगा। अब तक राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र का संचालन मुख्यत: ट्रस्ट के पदाधिकारियों और धार्मिक-सामाजिक नेतृत्व के माध्यम से होता रहा। अब पहली बार पूर्णकालिक सीईओ का पद बनाया गया है। इसका अर्थ है कि मंदिर प्रशासन को केवल धार्मिक न्यास के पारंपरिक ढांचे में नहीं बल्कि एक बड़े, जटिल और बहुस्तरीय संस्थान के रूप में देखने की जरूरत महसूस हुई है। आज अयोध्या में मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या, सुरक्षा व्यवस्था, दर्शन प्रबंधन, निर्माण परियोजनाएं, दान और वित्तीय व्यवस्था, कर्मचारी प्रबंधन, तकनीकी प्रणालियां, आपदा प्रबंधन, यातायात, आतिथ्य, वीआईपी व्यवस्था और भविष्य के अंतरराष्ट्रीय धार्मिक पर्यटन-इन सबका समन्वय किसी सामान्य मंदिर प्रबंधक के बूते की बात नहीं है। यह एक विशाल संस्थागत संचालन है और शायद यही वह बिंदु है जहां एयर मार्शल जितेंद्र मिश्र की नियुक्ति का पहला अर्थ सामने आता है-आस्था के केंद्र को आधुनिक संस्थागत प्रबंधन से जोड़ना होगा। यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं कि सीईओ पद के लिए 5,585 आवेदन आए। चयन समिति ने कई स्तरों पर उम्मीदवारों की छंटनी की और अंतत: तीन नामों का पैनल तैयार किया जिसमें से मिश्र का चयन हुआ। चयन प्रक्रिया में ऑनलाइन संवाद और प्रत्यक्ष साक्षात्कार जैसे चरण भी शामिल थे। इससे ट्रस्ट एक स्पष्ट संदेश देना चाहता दिखाई देता है-सीईओ का पद किसी राजनीतिक नियुक्ति की तरह नहीं बल्कि पेशेवर चयन के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। यही कारण है कि इस नियुक्ति को केवल पूर्व सैन्य अधिकारी को मंदिर की जिम्मेदारी के रूप में देखना अधूरा होगा। यह एक नए प्रशासनिक दर्शन का संकेत हो सकता है। यह सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्न है। एयर मार्शल किसी सामान्य सरकारी अधिकारी से अलग होते हैं। उनकी पूरी पेशेवर संस्कृति में कमांड, अनुशासन, समयबद्धता, जोखिम प्रबंधन, संसाधन नियंत्रण, संकट-प्रबंधन और जवाबदेही केंद्रीय तत्व होते हैं। मंदिर प्रशासन में भी आने वाले वर्षों में यही चुनौतियां बढ़ने वाली हैं। अयोध्या को भारत के सबसे बड़े धार्मिक-पर्यटन केंद्रों में विकसित करने की प्रक्रिया चल रही है। श्रद्धालुओं का दबाव बढ़ेगा। बुनियादी ढांचे का विस्तार होगा। मंदिर परिसर के साथ जुड़े अनेक संस्थानों और परियोजनाओं का संचालन होगा। सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन अधिक जटिल होगा। ऐसे में ट्रस्ट को शायद ऐसा व्यक्ति चाहिए जो प्रबंधक से अधिक कमांडर की तरह संस्थान चला सके। यहां मिश्र की सैन्य पृष्ठभूमि उपयोगी हो सकती है। जितेंद्र मिश्र का नाम ऑपरेशन सिंदूर से जुड़ा होना इस नियुक्ति को एक अलग प्रतीकात्मक आयाम देता है। वे उस समय पश्चिमी वायु कमान के प्रमुख थे। एक ओर सीमा पर राष्ट्रीय सुरक्षा की कमान संभालने वाला सैन्य अधिकारी और दूसरी ओर देश की सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक-सांस्कृतिक परियोजनाओं में से एक की प्रशासनिक जिम्मेदारी-यह बदलाव अपने आप में असाधारण है। इसे दो तरीके से देखा जा सकता है।

बच्चों में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति रोकने के लिए शिक्षक सतर्क रहे : पीएम मोदी

शिक्षक दिवस पर प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षकों से किया संवाद



नई दिल्ली,(एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शिक्षकों से विद्यार्थियों की पढ़ाई और शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ-साथ उनके व्यवहार, दिनचर्या और मानसिक स्थिति पर भी ध्यान देने का आह्वान किया है। उन्होंने बच्चों में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति और अत्यधिक स्क्रीन इस्तेमाल को लेकर शिक्षकों से सतर्क रहने की अपील की। प्रधानमंत्री लोक कल्याण मार्ग स्थित अपने आवास पर राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षकों और शिक्षाविदों के साथ संवाद कर रहे थे। शिक्षक दिवस से एक दिन पहले आयोजित इस कार्यक्रम में इस वर्ष के 82 पुरस्कार विजेताओं ने हिस्सा लिया। इनमें 48 स्कूली शिक्षक, 21 उच्च शिक्षण संस्थानों और पॉलिटेक्निक के शिक्षक तथा 13 कौशल प्रशिक्षक शामिल रहे। प्रधानमंत्री ने कहा कि शिक्षक की जिम्मेदारी केवल पाठ्यक्रम पूरा कराने तक सीमित नहीं है। उन्हें विद्यार्थियों के व्यवहार में होने वाले बदलावों को पहचानना चाहिए और जरूरत पड़ने पर उन्हें व्यक्तिगत मार्गदर्शन देना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था कमजोर होने के कारण बच्चों के जीवन में शिक्षकों की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। ऐसे में शिक्षकों को बच्चों के साथ संवाद बढ़ाने और उनकी समस्याओं के पीछे के कारणों को समझने की जरूरत है। प्रधानमंत्री ने बच्चों में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति का विशेष रूप से उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को विद्यार्थियों के व्यवहार में अचानक होने वाले बदलावों पर नजर रखनी चाहिए और यदि किसी बच्चे में नशे की आदत के संकेत दिखाई दें तो उसे सही दिशा देने और इस समस्या से बाहर निकालने में मदद करनी चाहिए। उन्होंने अत्यधिक स्क्रीन इस्तेमाल को लेकर भी बच्चों के प्रति सावधानी बरतने की जरूरत बताई। पीएम मोदी ने बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा को दबाने के बजाय उसे सही दिशा देने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि बच्चों की मासूमियत और सीखने की उत्सुकता को बनाए रखना जरूरी है। प्रधानमंत्री ने विद्यार्थियों में श्रम की गरिमा की भावना विकसित करने को भी शिक्षकों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बताया। उन्होंने कहा कि बच्चों को मेहनत और हर प्रकार के काम के सम्मान का महत्व समझाया जाना चाहिए। संवाद के दौरान राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार विजेताओं ने प्रधानमंत्री के साथ अपने शिक्षण अनुभव साझा किए। शिक्षकों ने कक्षा शिक्षण को अधिक प्रभावी, रोचक और विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनाने के लिए अपनाए गए विभिन्न नवाचारों और प्रयोगों के बारे में जानकारी दी। प्रधानमंत्री ने शिक्षकों के इन प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा केवल किताबों और परीक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों के समग्र व्यक्तित्व और भविष्य के निर्माण में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। वहीं केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रह्लाद जोशी ने इस वर्ष राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त करने वाले शिक्षकों से संवाद किया। उन्होंने कहा कि शिक्षक देश के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षकों को बच्चों को इस तरह तैयार करना चाहिए कि वे वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण में अपना योगदान दे सकें। प्रह्लाद जोशी ने कहा कि विद्यार्थी राष्ट्र की सबसे बड़ी संपत्ति हैं। इसलिए उनका केवल किताबी ज्ञान तक सीमित विकास नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें एक सर्वांगीण व्यक्तित्व के रूप में तैयार किया जाना जरूरी है। उन्होंने शिक्षकों से विद्यार्थियों में ज्ञान,कौशल,आत्मविश्वास और अच्छे मूल्यों का विकास करने का आह्वान किया। केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त करने वाले शिक्षकों के योगदान और उनके अनुभवों की सराहना की। उन्होंने कहा कि शिक्षकों की मेहनत और नवाचार देश की शिक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अवसर पर दोनों शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी और डॉ.सुकांत मजूमदार भी उपस्थित रहे।

संजय कुमार अग्रवाल छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बने

रायपुर। न्यायाधीश संजय कुमार अग्रवाल को छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय का नया कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। केंद्र सरकार ने इस संबंध में अधिसूचना जारी की। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रमेश सिन्हा 4 सितंबर को 2026 को सेवानिवृत्त हो गए थे। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने न्यायाधीश संजय कुमार अग्रवाल को छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय नया कार्यवाहक मुख्य न्यायधीश नियुक्त किया है। हालांकि न्यायाधीश संजय अग्रवाल को राजस्थान उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश बनाया चुका है। राष्ट्रपति के आदेश पर फिलहाल के लिए उन्हें छत्तीसगढ़ का कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। जस्टिस संजय कुमार अग्रवाल छत्तीसगढ़ के ही मूल निवासी हैं और कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश बनने से पहले वे छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय बिलासपुर में ही वरिष्ठ न्यायाधीश के रूप में पदस्थ थे। उनका जन्म 15 जुलाई 1965 को छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के रतनपुर में हुआ था। उनका परिवार रतनपुर का निवासी है। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा रतनपुर से ही पूरी की थी।

मस्जिदों को अवैध बताकर ध्वस्तीकरण का अभियान तत्काल रोके

लखनऊ । बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने उत्तर प्रदेश में मस्जिदों समेत अन्य धार्मिक स्थलों को अवैध बताकर ध्वस्त किए जाने की कार्रवाई पर सवाल उठाते हुए सरकार से इसे तत्काल रोकने की अपील की है। उन्होंने कहा कि संवैधानिक और धर्मनिरपेक्ष सरकार की जिम्मेदारी सभी धर्मों के मानने वालों तथा उनके धार्मिक स्थलों का समान रूप से सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित करना है। मायावती ने बिना समुचित कानूनी प्रक्रिया के किसी आरोपी का मकान गिराए जाने को लेकर भी सरकार पर निशाना साधा और 'कानून द्वारा कानून का राज' सुनिश्चित करने की मांग की। मायावती ने शनिवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म चएक्सज पर सिलसिलेवार पोस्ट के जरिए कहा कि जिला सहारनपुर की मस्जिद समेत पूरे उत्तर प्रदेश में आए दिन मस्जिदों को काफी आपत्तिजनक तरीके से अवैध बताकर उन्हें ध्वस्त करने का जो सरकारी अभियान चल रहा है, वह उचित नहीं है। सरकार को ऐसे नकारात्मक हालात से बचने के लिए इस पर तत्काल रोक लगानी चाहिए और समस्या के समाधान के अन्य उपाय करने चाहिए। बसपा प्रमुख ने कहा कि संवैधानिक धर्मनिरपेक्ष सरकार की जिम्मेदारी सभी धर्मों को मानने वाले लोगों और उनके धार्मिक स्थलों का समान आदर-सम्मान एवं सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

खड़ी लॉरी से टकराई कार,तमिलनाडु के आठ इंजीनियरिंग छात्रों की मौत

त्रिशूर। केरल के त्रिशूर में भीषण सड़क हादसा हो गया,जिसमें तमिलनाडु के इंजीनियरिंग कॉलेज के आठ छात्रों की मौत हो गई। छात्र जिस कार में यात्रा कर रहे थे,वह देर रात त्रिशूर जिले के कैपामंगलम में नेशनल हाईवे 66 पर खड़े एक मालवाहक ट्रक से टकरा गई। यह हादसा नेशनल हाईवे के उस हिस्से पर हुआ जहां निर्माण कार्य चल रहा है। यहां एक लॉरी हाईवे पर चल रहे निर्माण कार्य के दौरान बनाए गए डायवर्जन के पास खड़ी थी। इस लॉरी में तमिलनाडु नंबर वाली कार पीछे से आकर टकरा गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और उसमें सवार 8 लोग अंदर ही फंस गए। हादसे की खबर मिलते ही स्थानीय लोग और बचावकर्मी मौके पर पहुंचे। पीड़ितों को बाहर निकालने के लिए क्षतिग्रस्त वाहन को काटना पड़ा। माना जा रहा है कि कार में सवार सात लोगों की मौत घटनास्थल पर ही हो गई, जबकि एक अन्य पीड़ित को अस्पताल ले जाया गया लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका। इसके बाद पुलिस और आपातकालीन कर्मियों ने शवों को आगे की कार्रवाई के लिए भेज दिया।

शिक्षक दिवस पर अपने पुराने स्कूल पहुंचे भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन

पटना। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने शनिवार को बिहार प्रवास के दूसरे दिन शिक्षक दिवस पर अपने पुराने विद्यालय ज्ञान निकेतन का दौरा किया। उन्होंने विद्यालय के बच्चों से मुलाकात की और पद्मश्री आचार्य किशोर कुणाल की प्रतिमा का अनावरण किया। नितिन नवीन ने कहा कि जिस विद्यालय से उन्होंने पहली शिक्षा प्राप्त की, शिक्षक दिवस के दिन उसी विद्यालय में कार्यक्रम में शामिल होना उनके लिए भावुक और विशेष अनुभव है। उन्होंने बताया कि आचार्य किशोर कुणाल ने जब ज्ञान निकेतन की परिकल्पना की थी, तब नेतरहाट के उपप्राचार्य जे.एन. डार विद्यालय के पहले प्राचार्य बने थे और उनके पहले बैच में उनका भी नामांकन हुआ था। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि कंकड़बाग में शुरू हुआ ज्ञान निकेतन आज बिहार के अनेक युवाओं को शिक्षा देकर विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ा रहा है।

सफाई कर्मियों पर बॉम्बे हाई कोर्ट की कड़ी टिप्पणी :

भारत भले ही चांद पर पहुंच गया, लेकिन हाथ से मैला ढोना खत्म नहीं हुआ

हाई कोर्ट ने सफाई कर्मचारियों की मौत पर 30 लाख मुआवजा देने के निर्देश दिये



मुंबई ,(एजेंसी)। बॉम्बे हाई कोर्ट ने देश में दशकों से चली आ रही हाथ से मैला ढोने की अमानवीय प्रथा पर गंभीर चिंता जताई है। कोर्ट ने कहा कि भारत 21वीं सदी में चांद के अनछुए हिस्सों तक पहुंचने का दावा करता है, लेकिन जाति व्यवस्था जैसी सामाजिक बुराई के कारण आज भी कुछ लोगों को इंसानी गरिमा के खिलाफ काम करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। जस्टिस भारती डांगरे और मंजूषा देशपांडे की पीठ ने कहा कि संविधान लागू हुए 75 साल से अधिक समय बीत चुका है और वह सभी नागरिकों को कानून के समक्ष समानता का अधिकार देता है। इसके बावजूद देश अब तक उस सामाजिक बुराई से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाया है, जिसने समाज को सदियों से प्रभावित किया है। हाईकोर्ट ने यह टिप्पणी 'मैनुअल स्कैवेंजर्स के रूप में रोजगार का निषेध और उनका पुनर्वास अधिनियम, 2013' को लागू करने में राज्य और स्थानीय अधिकारियों की कथित विफलता के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई के दौरान की। 13 अगस्त को हुई सुनवाई का फैसला 3 सितंबर को सार्वजनिक किया गया। पीठ ने दो सरकारी आदेशों को रद्द करते हुए स्पष्ट किया कि निजी ठेकेदारों या निजी क्षेत्र के माध्यम से काम पर रखे गए सफाई कर्मचारियों की मौत होने पर उनके परिवार 30 लाख रुपये के मुआवजे के हकदार होंगे। यह मुआवजा राज्य सरकार को देना होगा, हालांकि बाद में संबंधित नियोक्ता से इसकी वसूली की जा सकती है। कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं की ओर से उठाए गए ऐसे पांच मृत सफाई कर्मचारियों के मामलों में उनके आश्रितों को भी 30-30 लाख रुपये का मुआवजा देने का निर्देश दिया। याचिका श्रमिक जनता संघ से जुड़े राजू माधवे और लेखक श्रेयस पांडे के साथ मिलकर दायर की गई थी। माधवे के बेटे सूरज की 2022 में मुंबा की एक हाउसिंग सोसाइटी में सेप्टिक टैंक की सफाई के दौरान मौत हो गई थी। याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता गायत्री सिंह ने दलील दी कि सरकारी आदेशों में मुआवजा देने की जिम्मेदारी राज्य या स्थानीय अधिकारियों के बजाय निजी ठेकेदारों और नियोक्ताओं पर डाल दी गई थी। राज्य सरकार की ओर से पहले अदालत को बताया गया था कि 36 जिलों को मैनुअल स्कैवेंजिंग से मुक्त घोषित किया जा चुका है और अगस्त 2023 में जिलाधिकारियों ने इसके प्रमाणपत्र भी जमा किए थे। हालांकि, बाद की सुनवाई में सरकार ने स्पष्ट किया कि यह स्थिति प्रमाणपत्र जारी किए जाने के समय की थी। याचिकाकर्ताओं ने सरकारी दावों पर सवाल उठाते हुए कहा कि मैनुअल स्कैवेंजिंग के जारी रहने के बावजूद राज्य की ओर से 81 मामलों में 10 लाख रुपये का मुआवजा दिया जा चुका है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बल पर ही संभव होगा विकसित भारत का निर्माणः राष्ट्रपति

राष्ट्रपति ने शिक्षक दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार समारोह को किया संबोधित

नई दिल्ली,(एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शनिवार को कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बल पर ही विकसित भारत के निर्माण का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि संविधान में निहित अवसरों की समानता के आदर्शों को कार्यरूप देने का सबसे प्रभावी माध्यम शिक्षा है और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि देश में एक भी विद्यार्थी अच्छी शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहे। राष्ट्रपति ने शिक्षक दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार-2026 समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि जो समाज अपने शिक्षकों का सम्मान करता है, वह सही अर्थों में प्रगतिशील समाज होता है। शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक प्राणवायु का संचार करते हैं और अपने स्नेह तथा समर्पण से विद्यार्थियों में ज्ञान, प्रेरणा, नैतिकता और संवेदनशीलता का विकास करते हैं। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने ओडिशा के रायरंगपुर स्थित श्री अरविंदो इंटीग्रल एजुकेशन सेंटर में पढ़ाए अपने विद्यार्थियों को याद किया और कहा कि उन्होंने अपने छात्रों से भी बहुत कुछ सीखा है। उन्होंने विद्यार्थियों से मिले प्रेम और स्नेह को अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक बताया। उन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले शिक्षकों में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों के शिक्षकों की बड़ी संख्या पर प्रसन्नता व्यक्त की। राष्ट्रपति ने कहा कि पुरस्कार विजेता शिक्षकों के योगदान और उपलब्धियों पर केंद्रित लघु फिल्मों को देखकर उनका यह विश्वास और मजबूत हुआ है कि निष्ठावान शिक्षक अग्रिम पंक्ति के राष्ट्र निर्माता हैं। राष्ट्रपति ने राजस्थान के झालावाड़ जिले के एक गांव के शिक्षक का उल्लेख करते हुए बताया कि किस तरह उन्होंने आधुनिक माध्यमों का उपयोग कर बच्चों को जीव विज्ञान पढ़ाने को प्रभावी बनाया। उन्होंने इसे आधुनिक शिक्षण-पद्धति का उत्कृष्ट उदाहरण बताया।

बिहार में बाढ़ का कहर जारी,गंगा के उफान से कई जिलों में लाखों लोग प्रभावित



गंगा,कोसी, बूढ़ी गंडक,पुनपुन और घाघरा नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही

पटना ,(एजेंसी)। बिहार में गंगा समेत कई प्रमुख नदियों के जलस्तर में लगातार वृद्धि से बाढ़ की स्थिति गंभीर बनी हुई है। जल संसाधन विभाग के आंकड़ों के अनुसार गंगा,कोसी, बूढ़ी गंडक, पुनपुन और घाघरा समेत कई नदियां विभिन्न स्थानों पर खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। आपदा प्रबंधन विभाग के मुताबिक, भागलपुर, भोजपुर, पटना, सारण और वैशाली में ही करीब 7.8 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं। इसके अलावा कई अन्य जिलों में भी निचले इलाकों में पानी फैलने से हजारों लोग प्रभावित हुए हैं। भागलपुर के खरीक प्रखंड की राघोपुर पंचायत में गंगा के बढ़ते जलस्तर के कारण काजीकौरैय-राघोपुर मार्जिनल बांध 23 अगस्त की रात करीब 30 मीटर लंबाई में क्षतिग्रस्त हो गया था। इसके बाद पंचायत के पांच वार्डों में पानी फैल गया, जिससे करीब 5,000 लोग प्रभावित हुए हैं। प्रशासन की ओर से प्रभावित लोगों के लिए छह सामुदायिक रसोई केंद्र चलाए जा रहे हैं। इनके माध्यम से अब तक करीब 70,600 थालियों में भोजन कराया जा चुका है। भोजपुर में गंगा के जलस्तर में वृद्धि के कारण निचले इलाकों में बाढ़ की स्थिति बनी हुई है। जिले के चार प्रखंडों की करीब 2.84 लाख आबादी प्रभावित हुई है। प्रशासन की ओर से 13 सामुदायिक रसोई केंद्र संचालित किए जा रहे हैं, जहां अब तक करीब 8,300 थालियों में भोजन कराया गया है। पटना जिले में भी गंगा के बढ़ते जलस्तर ने निचले इलाकों में मुश्किलें बढ़ा दी हैं। जिले के नौ प्रखंडों में करीब 2.32 लाख लोग प्रभावित हुए हैं। फिलहाल आठ सामुदायिक रसोई केंद्र चल रहे हैं, जिनसे करीब 5,900 थालियों में भोजन उपलब्ध कराया गया है। शनिवार से सात और स्थानों पर सामुदायिक रसोई केंद्र शुरू किए जा रहे हैं। सारण जिले के पांच प्रखंडों में करीब 20 हजार आबादी प्रभावित हुई है।

जेपीएससी परीक्षा में धांधली पर भाजपा हमलावर, कहा- पेपर लूट हुई है

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने झारखंड पब्लिक सर्विस कमीशन (जेपीएससी) परीक्षा में कथित अनियमितताओं और कांग्रेसशासित राज्यों में महिलाओं के कम प्रतिनिधित्व को लेकर कांग्रेस पर तीखा हमला बोला है। पार्टी ने आरोप लगाया कि झारखंड में सामने आए मामले ने छात्रों के हितों के प्रति कांग्रेस की वास्तविक सोच उजागर कर दी है। भाजपा प्रवक्ता एवं सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने शनिवार को पार्टी मुख्यालय में पत्रकार वार्ता में दावा किया कि जांच में सामने आया है कि असिस्टेंट कंजरवेटर ऑफ फॉरेस्ट और फॉरेस्ट रेंज ऑफिसर की परीक्षा के दौरान स्ट्रॉन्ग रूम को तोड़कर प्रश्नपत्र निकाले गए और उनमें बदलाव किया गया। पार्टी के अनुसार यह केवल पेपर लीक नहीं बल्कि पेपर लूट का मामला है। इस पूरे प्रकरण पर कांग्रेस की चुप्पी झारखंड के अभ्यर्थियों के लिए बेहद पीड़ादायक है और इससे छात्रों के प्रति उसकी संवेदनहीनता सामने आती है।

गाजियाबाद की ट्रोनिका में बैग फैक्ट्री में भीषण आग,कोई हताहत नहीं



गाजियाबाद। गाजियाबाद के औद्योगिक क्षेत्र ट्रोनिका सिटी के सेक्टर ए-3 में देर रात एक बैग निर्माता फैक्ट्री में भीषण आग लग गई। आग की लपटें इतनी तेज थीं कि दमकल विभाग की 12 गाड़ियों और वाटर टैंकरों को मौके पर तैनात करना पड़ा। फैक्ट्री के पूरी तरह ढके (कवर्ड) होने के कारण जवानों को पीछे की दीवार तोड़कर अंदर प्रवेश करना पड़ा। दमकल कर्मियों की त्वरित कार्रवाई से आग को आसपास की फैक्ट्रियों में फैलने से रोक लिया गया। हादसे में किसी के हताहत होने या घायल होने की सूचना नहीं है। रात 9.50 बजे मिली सूचना,शेड के नीचे सुलगती आग पर कूलिंग ऑपरेशन जारीमुख्य अग्निशमन अधिकारी राहुल पाल ने घटना के संबंध में आधिकारिक जानकारी साझा की- पीछे की दीवार तोड़कर बनाया रास्ता- सीएफओ राहुल पाल ने बताया कि रात लगभग 9.50 बजे नामक बैग बनाने वाली फैक्ट्री में आग लगने की सूचना प्राप्त हुई थी। फैक्ट्री चारों तरफ से कवर्ड थी, जिससे मुख्य द्वार से अंदर पानी पहुंचाना बेहद कठिन था। दमकल टीम ने तुरंत पीछे की दीवार को तोड़ा और अंदर पानी की बौछारें शुरू कीं। आग को फैलने से रोक लिया गया है। शेड के नीचे दबे मलबे और सामान में फंसी आग को पूरी तरह बुझाने के लिए जेसीबी की मदद से मलबा हटाया जा रहा है और लगातार कूलिंग ऑपरेशन चलाया जा रहा है।

सीजीपीएससी भर्ती घोटाले में ईडी ने 30 लोगों को पूछताछ के लिए बुलाया

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग भर्ती घोटाले में प्रवर्तन निदेशालय की कार्रवाई



रायपुर,(एजेंसी)। छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (सीजीपीएससी) भर्ती घोटाले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 30 लोगों को मनी लॉन्ड्रिंग और कैश सिंडिकेट की जांच के सिलसिले में बीती देर रात नोटिस जारी कर पूछताछ के लिए बुलाया है। मुख्य आरोपित उत्कर्ष चंद्राकर की गिरफ्तारी के बाद ईडी के रायपुर जोनल ऑफिस ने कथित कैश सिंडिकेट का पता लगाने के लिए विवादित अभ्यर्थियों, एनजीओ, एक बड़ी कंपनी और रिसार्ट संचालकों को पूछताछ के लिए बुलाया है। शुरुआती जानकारी के अनुसार, ईडी ने इस नेटवर्क के तार जोड़ने के लिए मुख्य रूप से 16 से अधिक ऐसे लोगों को बुलाया था जो सीधे तौर पर अभ्यर्थी, कुछ स्थानीय कारोबारी या प्रॉपर्टी डीलर थे। इसके तुरंत बाद, जब ईडी ने कैश सिंडिकेट और मनी लॉन्ड्रिंग की विस्तृत जांच शुरू की, तो इस दायरे को बढ़ा दिया गया। अब इसमें करीब 30 लोग शामिल हैं। ज्ञात हो कि, मामले के एक प्रमुख बिचौलिए कोचिंग संचालक उत्कर्ष चंद्राकर को एक सितंबर को गिरफ्तार किया गया था। उस पर नौकरी दिलाने के नाम पर 3 करोड़ से अधिक जुटाने और राजनीतिक रसूख का इस्तेमाल करने का आरोप है। 5 सितंबर तक वह ईडी की कस्टोडियल रिमांड पर है, जिससे हुई पूछताछ के आधार पर यह नए नोटिस जारी किए गए हैं। जांच एजेंसी यह पता लगा रही है कि परीक्षा के लीक प्रश्न पत्र बांटने के बदले जो करोड़ों रुपये नकद वसूले गए थे, उन्हें किन-किन बैंकिंग चैनल्स, सीएसआर फंड या फर्जी कंपनियों से सफेद या ट्रांसफर किया गया। यह भी बताया गया है कि उत्कर्ष चंद्राकर और डॉक्टर विकास चंद्राकर ने परीक्षा पास कराने का दावा करके अभ्यर्थियों से 3 करोड़ रुपये से ज्यादा वसूले थे। इसमें से लगभग 2.80 करोड़ रुपये महासमुंद के डॉ अनिल चंद्राकर नाम के व्यक्ति तक पहुंचाए गए। ज्ञात हो कि एक सितंबर को रायपुर, दुर्ग, धमतरी और जशपुर में पांच ठिकानों पर ताबड़तोड़ छापेमारी की गई थी। इस कार्रवाई के दौरान डिजिटल डिवाइस, वित्तीय रिकॉर्ड और बेनामी संपत्ति से जुड़े कई अहम दस्तावेज जब्त किए गए हैं। ईडी को आशंका है कि बड़ी कंपनी के सीएसआर फंड का इस्तेमाल रिश्वत की रकम देने के लिए किया गया। एजेंसी एनजीओ और रिसार्ट संचालकों से जुड़े लेनदेन की भी जांच कर रही है।इस घोटाले में अनिल चंद्राकर नामक व्यक्ति का नाम प्रमुखता से शामिल है और वह ईडी की जांच के दायरे में है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा जारी आधिकारिक बयान के अनुसार,अनिल चंद्राकर इस पूरे मामले में पैसों के लेन-देन (मनी ट्रेल) की एक मुख्य कड़ी है। एजेंसी के अनुसार मुख्य आरोपित उत्कर्ष चंद्राकर और डॉ. विकास चंद्राकर ने सीजीपीएससी-2021 परीक्षा का पेपर लीक कराने का झांसा देकर अभ्यर्थियों से 3 करोड़ से अधिक की नकदी (कैश) वसूली थी। जांच में पाया गया कि इस वसूली गई रकम में से करीब 2.80 करोड़ अनिल चंद्राकर को सौंपे गए थे। जांच एजेंसियों के मुताबिक,अनिल चंद्राकर छत्तीसगढ़ का एक कारोबारी है और मुख्य आरोपित उत्कर्ष चंद्राकर का करीबी सहयोगी है। अभ्यर्थियों से पैसे जुटाने और कैश सिंडिकेट के इस नेटवर्क को संचालित करने में उसकी बड़ी भूमिका रही है।